सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
E-mail : tameer1963@gmail.com
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक) 50 यु.एस. डॉलर	

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

सच्चा राही
A/c. No. 10863759642 (Current A/c.)
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.
कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नं0 0522–2740406 अथवा ईमेल: tameer1963@gmail.com पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक — लखनऊ

जून, 2019 वर्ष 18 अंक 04

ईद के दिन की खुशी मनाएं

आओ ईद मनाऐं भाई, आपस में मिल जाएं भाई
बहुत सवेरे हम उठ जाऐं, फ़ज्र जमाअ़त से पढ़ आऐं
ईद का दिन है ग़ुस्ल करें हम, पहने अच्छे कपड़े भी हम
ईद का दिन है इत्र लगाऐं, सुन्नत है कुछ मीठा खाऐं
ज़िक्र ख़ुदा का करते हुए हम, चलें मुसल्ला की जानिब हम
पढ़ के दोगाना ईद के दिन का, शुक्र करें हम अपने रब का
पढ़ें नबी पे दुरूद व सलाम, ताकी ख़ुश हो रब्बे अनाम
खाऐं सिवैयां और खिलाएं, ईद के दिन की ख़ुशी मनाऐं

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Editing by: Qamaruzzama-9452295052

विषय एक दृष्टि में

क़ुर्आन की शिक्षा................................	मौ0 बिलाल अब्दुल हयी हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	07
ईदुल फित्र..	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	09
इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद	हज़रत मौ0 अबुल हसन अली नदवी रह0	12
आदर्श शासक.....................................	मौलाना अब्दुस्सलाम क़िदवाई नदवी	14
हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म	हज़रत मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी	16
मानव समूह की	हज़रत मौ0 सै0 अबुल हसन अली नदवी रह0	17
ज़मीं खा गई आस्मां कैसे कैसे..........	हज़रत मौलाना मुहम्मद वली रहमानी	18
आपके प्रश्नों के उत्तर......................	मुफ़्ती ज़फ़र आलम नदवी	25
सफलता..	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	27
एक मिसाली जिन्दगी...........................	मौलाना सैय्यद मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी	30
परीक्षा की तैयारी	शमीम इक़बाल खाँ	32
इस्लामी कल्याणकारी व्यवस्थाएं.......	मौलाना सैय्यद जलालुद्दीन उमरी	36
सीख की बातें (पद्य)..........................	इदारा	39
मदीना तैय्यबा जाने वालों	इदारा	40
अपील बराए तामीर............................	इदारा	41
उर्दू सीखिए.......................................	इदारा	42

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-अनआमः

अनुवाद—

और अगर हम पैग़म्बर को फरिश्ता बनाते तो यक़ीनन एक आदमी ही (के रूप में) बनाते और उन पर वही संदेह डालते जिस संदेह में वे पड़ रहे हैं[1](9) और निःसंदेह आप से पहले भी बहुत से पैग़म्बरों को मज़ाक़ बनाया जा चुका है तो उनकी हंसी करने वालों पर जो वे मज़ाक बनाया करते थे वह उलट पड़ा(10) आप कह दीजिए कि ज़मीन में चलो फिरो फिर देखो कि झुठलाने वालों का परिणाम (अंजाम) कैसा हुआ(11) उनसे पूछिए कि आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है वह किस का है, आप कह दीजिए अल्लाह का है, उसने अपने आप पर रहमत (दया) अनिवार्य कर ली है, वे क़यामत के दिन तुम्हें एकत्र करके रहेगा जिसमें कोई संदेह नहीं जिन्होंने अपना नुकसान कर रखा है बस वही नहीं मानते(11) रात और दिन में बसने वाली हर चीज़ उसी की है और वह सब सुनता और जानता है[2](13) आप कह दीजिए कि क्या मैं अल्लाह के अलावा किसी और को अपना मददगार बनाऊँ जो आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला और वही सबको खिलाता और उसको खाने की ज़रूरत नहीं, आप कह दें कि मुझे आदेश है कि सब से पहले मैं आदेश मानूं और आप हरगिज़ साझी ठहराने वालों में शामिल न हों(14) आप कह दीजिए कि अगर मैंने नाफ़रमानी (अवज्ञा) की तो मुझे बड़े दिन के अज़ाब (दण्ड) जिससे टल गया तो उस पर अल्लाह ने रहम (दया) कर दिया और यही खुली सफ़लता है(16) और अगर अल्लाह आपको किसी तंगी (तकलीफ़) में डाल दे तो उसके अलावा उसको दूर करने वाला नहीं और अगर आपको भलाई पहुंचा दे तो वही हर चीज़ की पूरी सामर्थ्य (कुदरत) रखने वाला है[4](17) और वह अपने बन्दों पर ज़ोर वाला है और वह हिकमत (तत्वदर्शिता) वाला पूरी ख़बर रखने वाला है(18) पूछिए कि कौन सी चीज़ है जिसकी गवाही सबसे बड़ी है, कह दीजिए अल्लाह ही मेरे और तुम्हारे बीच गवाह है और इस कुरआन की वह्य (ईशवाणी) मुझ पर इसलिए की गई ताकि इसके द्वारा मैं तुम्हें और जिस तक यह पहुंचे उसे सावधान करूँ, क्या तुम

इसकी गवाही देते हो कि अल्लाह के साथ और भी माबूद (पूज्य) हैं, आप कह दीजिए कि मैं तो इसकी गवाही नहीं दे सकता, आप कह दीजिए कि वह केवल एक ही माबूद (पूज्य) है और तुम जो शिर्क (बहुदेववाद) करते हो उससे मेरा कोई संबंध नहीं(19) जिन लोगों को हमने किताब दी है वे पैग़म्बर को ऐसे ही पहचानते हैं जैसे अपने लड़कों को पहचानते हैं, जिन्होंने अपने आपको नुकसान में डाला तो वही ईमान नहीं लाते(20) उससे बढ़ कर अन्याय करने वाला कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बांधे या उसकी निशानियों को झुठलाए, अन्याय करने वाले सफ़ल हो ही नहीं सकते[5](21) और जब हम उन सब को एकत्र करेंगे फिर शिर्क करने वालों से पूछेंगे वे तुम्हारे साझीदार कहां गए जिन का तुम्हें दावा था(22) फिर उनसे शरारत न बन पड़ेगी सिवाए इसके कि वे कहेंगे उस अल्लाह की क़सम जो हमारा पालनहार है हम मुश्रिक (बहुदेववादी) तो न थे(23) देखिए कैसा अपने ऊपर झूठ बोले और जो बातें बनाया करते थे वह सब हवा हो गई[6](24) और उनमें वे भी हैं जो आपकी ओर कान लगाए रखते हैं और हमने उनके दिलों पर परदे डाल दिए हैं ताकि समझ न सकें और उनके कानों को भारी कर दिया है (ताकि सुन न सकें) और अगर वे सारी निशानियां देख लें तब भी ईमान न लाएं[7] यहां तक कि जब वे आपके पास बहस करने के लिए आते हैं तो उनसे कुफ़्र (इन्कार) करने वाले कहते हैं कि यह तो मात्र पहलों की कहानियां हैं(25) और वे उससे रोकते हैं और खुद भी उससे दूर रहते हैं और वे तो अपने आपको तबाह कर रहे हैं लेकिन समझते ही नहीं(26)।

तफ़्सीर (व्याख्या):–

1. फ़रिश्ता पैग़म्बर बनाया जाता तो इंसान ही के रूप में होता ताकि लोग फ़ायदा उठा सकें और फिर उन पर वही संदेह होते जो अब हो रहे हैं।

2. ''लिमम्माफिस्समावाति वल् अर्ज़'' में जगह के एतबार से आम है और यहां ''वहलू मा सकन फिल्लैलि वन्नहार'' में समय के एतबार से आम अर्थात हर जगह और हर ज़माने में जो कुछ भी है वह सब उसी का है।

3. यह आप पर रख कर दूसरों को सुनाया गया यानी ख़ुदा के निर्दोष और प्रियतम बन्दे से किसी प्रकार की नाफ़रमानी (अवज्ञा) हो तो अल्लाह के अज़ाब का शंका होता है।

4. सब अधिकार उसी को है वह जो चाहे करे।

5. जिस तरह अपनी संतान को पहचानने में कोई कठिनाई नहीं होती उसी तरह किताब वालों की लगातार गवाहियों से वे खूब जानते हैं

शेष पृष्ठ .....08 पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

रुकूअ़ और सज्दे की दुआऐंः–

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया रुकूअ़ में अपने रब की बड़ाई बयान करो और सज्दे में दुआऐं मांगो, यक़ीन है कि तुम्हारी दुआऐं कबूल हो जायें। (मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि सज्दे की हालत में बंदा अपने परवरदिगार से बहुत ही करीब होता है, पस सज्दे में दुआएं मांगा करो।

(मुस्लिम)

हज़रत आयशा रज़ि0 से रिवायत है कि एक रात मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को न पाया तो तलाश करने लगी, अचानक क्या देखा कि आप रुकूअ़ या सज्दे में हैं और यह फरमा रहे हैं ''सुब्हानक व बिहम्दिक ला इलाहा इल्ला अंतः और एक रिवायत में है कि मेरा हाथ आपके कदमों पर पड़ा आप सज्दे में थे आपके दोनों कदम खड़े हुए थे और आप यह दुआ पढ़ रहे थे। अनुवादः ऐ अल्लाह मैं तेरी रजामंदी के साथ तेरे गुस्से से पनाह मांगता हूं और तेरी आफियत के साथ तेरे अज़ाब से पनाह मांगता हूं और मैं तारीफ को गिन नहीं सकता, बस तू तो वैसा ही है जैसा तूने अपनी तारीफ की है। (मुस्लिम)

दिन में हज़ार नेकियाँः–

हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि0 से रिवायत है कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाजिर थे आपने फरमाया कि क्या कोई दिन में एक हज़ार नेकी कमाने से बेबस है एक आदमी ने कहा या रसूलुल्लाह भला दिन भर में एक हजार नेकी कौन कर सकता है आपने फरमाया ''सुब्हानल्लाहि'' सौ बार पढ़ लेने से एक हज़ार नेकियां हासिल हो जायेंगी या एक हज़ार गुनाह उससे मिटा दिये जायेंगे। (मुस्लिम)

बदन का सदक़ाः–

हज़रत अबू जर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया हर सुब्ह को तुम्हारे हर जोड़ पर तुम्हारे लिए सदक़ा जरूरी है, सुब्हानल्लाहि सदका है, और अलहम्दुलिल्लाहि सदका है ला इलाहा इल्लल्लाहु सद्क़ा है, और अल्लाहु अकबर कहना सदका है और नेकी का हुक्म देना सद्क़ा है, बुराई से रोकना सद्क़ा है, और इन सबके बदले में चाश्त की सिर्फ दो रकअतें काफी हैं। (मुस्लिम)

अल्लाह का ज़िक्र न करने वाला मुर्दा हैः–

हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अल्लाह का ज़िक्र करने

वालों और न करने वालों की मिसाल जिंदा और मुर्दे की तरह है। (बुखारी)

ज़मीन के कीड़े मकोड़ों से हिफाजत की दुआः–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि एक आदमी हुजूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाजिर हुआ और अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक बिच्छू ने मुझे आज रात को डस लिया उससे मुझे आखरी दर्जे की तकलीफ पहुंची, आपने फरमाया अगर यह कलिमात रात को कह लेते "अउजुबिकलिमातिल्लाहि ताम्माति मिन शर्रि म खलक़" तो तुम इस मुसीबत से जरूर महफूज़ रहते। (मुस्लिम)

दूसरे के लिए दुआ अपने लिए दुआ हैः–

हज़रत अबू दर्दा रज़ि0 से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फरमाते सुना है जो मुसलमान बंदा अपने मुसलमान भाई की गैर मौजूदगी में उसके लिए दुआ करता है तो फरिशता कहता है कि तुझको भी यही भलाई मिले जो तू उसके लिए मांग रहा है। (मुस्लिम)

दुआ कबूल होने का सबबः–

हज़रत अबू दर्दा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया हर मुसलमान बन्दे की दुआ कबूल होती है जो अपने मुसलमान भाई के लिए उसके पीठ पीछे दुआ करता है, एक फरिशता इस ड्यूटी पर रहता है जब वह अपने भाई की गैर मौजूदगी में कोई दुआ करता है तो वह फरिशता आमीन कहता है और कहता है कि यही भलाई इसको भी अता कर।

(मुस्लिम शरीफ)

❖❖❖

–प्रस्तुति–
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

अनुरोध

अगर आपको "सच्चा राही" की सेवाएं पसन्द हों तो आप से अनुरोध है कि "सच्चा राही" के नये ग्राहक बनाने का प्रयास करें, अल्लाह आपको अज्र देगा और हम आपके आभारी होंगे।

(संपादक)

क़ुर्आन की शिक्षा ....

कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही अंतिम पैग़म्बर हैं जिनका शुभ संदेश दिया जा चुका है लेकिन वे झूठ का पुल बाँध देते हैं।

6. दुन्या में अपने शिर्क पर गर्व जब वास्तविकता खुली तो कैसा झूठ बकने लगे।

7. यह उन लोगों का उल्लेख है जो खराबी निकालने और आपत्ति के लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बातों की ओर कान लगाते थे इससे फ़ायदा उठाना और सत्य को स्वीकार करना मकसद न था, उसका परिणाम यह हुआ कि सत्य को समझने ही से उनके दिल वंचित कर दिए गए, सत्य मार्ग का संदेश सुनना भारी मालूम होने लगा, आँखें शिक्षा–दृष्टि से खाली हो गईं कि हर प्रकार की निशानियों को देख कर भी ईमान लाने की तौफ़ीक़ (सामर्थ्य) नहीं होती यह सारी मुसीबतें खुद उनकी लाई हुई हैं। ◆◆

–प्रस्तुति–
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

ईदुल फ़ित्र

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

ईदुल फित्र अर्थात रोज़ा खोलने की खुशी, अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब मक्का मुकर्रमा से हिज़रत फ़रमा कर मदीना तय्यिबा तशरीफ़ लाए तो देखा कि मुसलमान साल में दो दिन किसी खास जगह पर जमा होते हैं वहां खाते पकाते अशआर पढ़ते और ख़ुशियां मनाते हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा से पूछा यह क्या है? सहाबा ने अर्ज़ किया कि हम लोग इस्लाम से पहले ही इन दो दिनों में जश्न मनाते रहे हैं वही अब भी कर रहे हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआला ने तुम को इन से अच्छे दो दिन खुशी मनाने के लिए दिये हैं उन में से एक रमज़ान के रोज़ों के पूरे हो जाने पर पहली शव्वाल को ईदुल फित्र का दिन, दूसरा 10 जिल हिज्ज को ईदुल अज़हा का दिन, चुनांचे सहाबा उन पुराने दो दिनों के जश्न (उत्सव) को छोड़ कर इन दोनों दिनों में खुशियां मनाने लगे।

लेकिन कुर्बान जाइए दीने इस्लाम पर अल्लाह तआला ने इन ख़ुशी के दिनों में भी मुसलमानों को इन्सानियत के दायरे में रहने का हुक्म दिया। खुशी में आपे से बाहर हो कर नाच गाने बजा कर बेसुध हो कर नाचने गाने की इजाज़त नही दी है कि इन बातों से वास्तविक प्रसन्नता (हक़ीक़ी ख़ुशी) नहीं मिलती। इस्लाम ने जिस तरह खुशी मनाने का आदेश दिया है उससे हक़ीक़ी खुशी हासिल होती है।

बेहतर है कि रमज़ान के आखिर में सद—कए—फित्र अदा करे अगर आखिर रमजान में सद—कए—फ़ित्र अदा कर दिया तो अच्छी बात है वरना आज सद—कए—फित्र अपने निर्धन भाईयों को पहुंचा दें।

ऐसी खुशी भी कोई खुशी है कि हम तो अच्छा खाएं और अच्छा पहनें परन्तु हमारा निर्धन भाई अच्छा खाने और अच्छा पहनने से वंचित रहे। सद—कए—फित्र यह है कि हर धनवान (साहिबे निसाब) अपनी और अपनी नाबालिग़ औलाद की ओर से प्रति व्यक्ति कम से कम एक किलो 600 ग्राम गेहूं या उसकी क़ीमत निकाल कर अपने निर्धन भाई को पहुंचाएं कुछ लोगों ने एक किलो 600 ग्राम से ज़ियादा लिखा है इसी लिए यहां कम से कम एक किलो 600 ग्राम लिखा गया है। अगर ज़ियादा दे दें तो उस का ज़ियादा सवाब लेंगे।

दूसरी बात यह बतायी गई है कि ईद के रोज़ ज़रा सवेरे उठ कर मर्द फज्र की नमाज़ मस्जिद में जमाअ़त से अदा करें औरतें अपने घरों में फ़ज्र की नमाज़ अव्वल वक़्त में पढ़ कर घर के लोगों के लिए कुछ मीठे का प्रबन्ध करें। अब सब लोग ईद का गुस्ल करें कि गुस्ल करने से भी एक प्रकार की प्रसन्नता प्राप्त होती है, गुस्ल में वुज़ू करें मिस्वाक से दांत साफ़ करें कि ईद के दिन गुस्ल करना और मिस्वाक करना सुन्नत बताया गया है। फिर अल्लाह ने जो कपड़े दिये हों पाक साफ़ अच्छे कपड़े पहनें, गरीब लोग नये कपड़े न बना सकें तो पुराने कपड़े पहले से पाक साफ़ कर लें और उन्हीं को पहनें सुन्नत का सवाब मिलेगा। फिर चाहिए कि कोई खुश्बू, इत्र वगैरह लगाएं यह भी सुन्नत है, गरीब भाई इत्र नहीं खरीदते हैं, जिनके पास इत्र की शीशी हो उनको चाहिए कि जिन के पास खुशबू का इन्तिजाम नहीं हो उनको इत्र लगा कर उनको भी सुन्नत का सवाब दिलायें, अब कुछ मीठा खाएं, हमारे मुल्क में सिवय्यां खाने का रवाज़ है, यह भी ठीक है इससे भी सुन्नत का सवाब मिल जाएगा वरना अगर ख़जूर या छुहारे खायें तो और अच्छी बात है।

नहाने और मिस्वाक करने से दिल को राहत मिलती है मन प्रसन्न होता है साफ कपड़े पहनने, इत्र लगाने से दिल खुश होता है फिर मीठा खाने से मन प्रसन्न होता है साथ ही इन सब कामों पर अल्लाह तआला की ओर से सवाब के मिलने से जहां मन प्रसन्न हुआ वहीं रूह को भी खुशी हासिल हुई।

अब ईद की नमाज़ के लिए जाना है जहां जैसा नज़्म हो, कहीं मस्जिद में नमाज़ होती है, कहीं किसी मैदान में तो कहीं ईदगाह में जहां जैसा प्रबन्ध हो नमाज़ की अदाएगी करना है। इस नमाज़ में मर्द और बच्चे जाते हैं औरतों पर यह नमाज़ वाजिब नहीं है लेकिन बाज जगह औरतें भी जाती हैं, अगर पर्दे के साथ औरतें नमाज़ पढ़ लेती हैं तो उनकी नमाज़ भी हो जायेगी लेकिन चुंकि उन पर यह नमाज़ वाजिब नहीं है लिहाज़ा अगर वह बेपर्दगी और बद नज़्री से बचने के लिए यह नमाज़ घर में पढ़ें तो बेहतर है। मैंने रियाज़ (सऊदिया) में ईद की नमाज़ पढ़ी है बहुत बड़ा मजमा था मगर औरतें ईद की नमाज़ में शरीक़ न थीं।

ईदगाह या जहां भी नमाज़ के लिए घर से निकलें तो रास्ते में धीमी आवाज़ से यह तकबीर पढ़ते हुए जाएं:—

"अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर, ला इलाह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर व लिल्लाहिलहम्द"

ईदगाह पहुंच कर इमाम के पीछे दो रकअत ईदुल फित्र की नमाज़ जमाअत से अदा करें, इस नमाज़ में 6 तक्बीरें ज़ियादा कही जाती हैं, पहली रकअ़त में नीयत और सना के बाद तीन बार अल्लाहु अकबर कहें और दूसरी रकअ़त में अल्हमदु और सूरे मिलाने के बाद रुकूअ़ से पहले तीन तक्बीरें कहें हर तक्बीर में इमाम और मुक्तदी सबको अल्लाहु अकबर ज़ुबान से कहना वाजिब है, तकबीर कहते वक्त कानों तक हाथ उठाना सुन्नत है।

नमाज़ के बाद इमाम दो खुत्बे पढ़ेगा इन खुत्बों का सुनना तमाम नमाज़ियों पर वाजिब है। कोई इमाम नमाज़ के बाद दुआ मांगता है कोई खुत्बों के बाद। बहुत जगह लोग एक दूसरे से गले मिलते हैं बाज उलमा इसको बिदअत कहते हैं लेकिन आम लोगों को हम इससे रोकने को अच्छा नहीं समझते और मैंने रियाज़ में अरबों को ईद की नमाज़ के बाद एक दूसरे से मिलते और बोसा लेते देखा है।

बेहतर है कि नमाज़ के बाद अगर रास्ता बदल सकें तो ज़ियादा सवाब पाएंगे न बदल सकें तो कोई हरज़ नहीं।

नमाज़ के बाद अजीज़ों पड़ोसियों के घर ईद मिलने जाने का रवाज है इसमें कोई हरज नहीं बल्कि यह भी खुशी का एक ज़रीआ़ है।

बाज़ जगह नमाज़ के बाद कुछ तफरीही खेल तमाशे होते हैं, इसकी भी गुंजाइश है, लेकिन बाजा वग़ैरह न हो, कुछ लोग ईद के रोज़ गाने बजाने की रिकार्डिंग सुनते हैं यह दुरुस्त नहीं है जिस काम से अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ना खुश हों उससे खुशी हासिल करना बुरा है और गुनाह है।

कुछ लोग ईद के रोज़ इजतिमाअ़ करके उसमें दीन की बातें करते हैं और हम्द व नअ़त पढ़ कर खुशी हासिल करते हैं, इसकी भी गुंजाइश है मगर, अशआर इस्लामी हों, गन्दे या नाजाइज़ व बेहूदा अशआ़र न पढ़े जाएं, कि बाज़ लोग इसमें तजावुज़ कर जाते हैं, बड़ों को इस पर कन्ट्रोल रखना चाहिए।

अगर हम ईद के दिन की सुन्नतों पर अमल करें, मुस्तहब्बात अपनाएं और सामूहिक ईद की नमाज़ पढ़ें और दूसरे मुबाह काम शरीअ़त की हुदूद में रह कर अपनाएं तो इन कामों से मन मस्तिष्क तथा आत्मा को जो प्रसन्नता तथा शान्ति प्राप्त होगी वह किसी और तरीक़े से प्राप्त नहीं हो सकती। अल्लाह तआ़ला हम सबको ईद के दिन की वास्तविक प्रसन्नता प्रदान करे।

आमीन।

❖❖❖

—पिछले अंक से आगे

इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद

—हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह0) — अनुवादकः मुहम्मद हसन अंसारी

रिसालत (दूतता)

नबियों का सम्मान और उनसे प्रेमः—

पैग़म्बरों की इन विशेष आदतों और रहन—सहन का नाम शरीअ़त की ज़बान में ''खेसाले फितरत'' और ''सुन्नुलहुदा'' है जिसकी तरफ़ शरीअत प्रेरित करती है। इन आचरणों और व्यवहारों को अपनाना लोगों को नबियों के रंग में रंग देता है और यह वह रंग है जिसके बारे में पवित्र कुर्आन कहता हैः—

अनुवादः—*(कह दो कि हमने) ''अल्लाह का रंग अपना लिया है और अल्लाह से बेहतर रंग किसका हो सकता है?'' और हम तो उसी की इबादत करने वाले हैं।*

(सूरः अल—बक़रह 138)

एक आदत की दूसरी आदत, एक आचरण के दूसरे आचरण, एक तौर तरीक़ा के दूसरे तौर तरीक़े पर दीन व शरीअत (धर्म व इस्लामी क़ानून) में प्राथमिकता का यही रहस्य है। इसी कारण से इसको इस्लामी शरीअत, ईमान वालों की पहचान, प्रकृति की मांग की पूर्ति, और इसके ख़िलाफ़ तरीक़ों को शुद्ध प्रवृत्ति से विचलन और अज्ञान लोगों की पहचान करार देती है और इन दोनों तरीक़ों और रास्तों में मात्र इस बात का अन्तर है कि एक ख़ुदा के पैग़म्बरों और उसके प्रिय भक्तों का अपनाया हुआ है, दूसरा उन लोगों और क़ौमों का जिनके पास हिदायत (सत्यमार्ग) की रौशनी और आसमानी शिक्षायें नहीं हैं। इन उसूल के तहत खाने—पीने, कामों में दायें—बायें हाथ का फ़र्क, पहनाव व श्रृंगार, रहन सहन व सभ्यता के बहुत से नियम आ जाते हैं। और यह सुन्नत, सुन्ने नबवी और इस्लामी विधि शास्त्र का एक विस्तृत अध्याय है। (विस्तार के लिए लेखक की किताब मंसबे नबूवत पढ़ें)।

जहां तक अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का संबंध है, वहां इस पहलू पर और अधिक बल देने की ज़रूरत है। आपके व्यक्तित्व के साथ केवल नियम और क़ानून का संबंध काफी नहीं, भावनात्मक सम्बन्ध और ऐसा गहरा प्रेम वांछित है जो जान व माल, परिवार के प्रेम पर हावी हो। सही हदीस में आया है— ''तुम में से कोई व्यक्ति उस समय तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसको अपनी संतान, मां बाप तथा तमाम लोगों से अधिक प्रिय न हो जाऊँ'' (बुख़ारी व मुस्लिम)। दूसरी सही हदीस में है, ''तुम में से कोई उस समय तक मोमिन न होगा, जब तक मैं उसे अपने आप से अधिक प्रिय न हूँ।''

इस सिलसिले में उन सारे विरोधी कारणों व उत्प्रेरकों से बचने व एहतियात बरतने की ज़रूरत है, जो इस महब्बत के स्रोतों को

शुष्क या उसको कमज़ोर करते हैं। भावनायें और अनूभूतियां महब्बत में उदासीनता, सुन्नत पर अमल करने की ललक में कमज़ोरी और आपको ''दाना–ए–सुबुल (रास्तों को अच्छी तरह जानने वाला), ख़त्मुर्रसुल (अंतिम संदेष्टा) मौल–ए–कुल'' (सबके सरदार) समझने में हिचक और सीरत व हदीस मे अध्ययन से मुंह फेरने तथा असावधानी का कारण बनते हैं। कुर्आन की सूरः हुजरात, फ़तह आदि के गहन अध्ययन और नमाज़ व नमाज़ जनाजा में दुरूद व सलात को शामिल किये जाने पर विचार–विमर्श करने में दुरूद की फज़ीलत (महत्व) में आई अनेक आयतों और हदीसों का रहस्य समझने का यह आवश्यक नतीजा निकलता है कि रसूल के बारे में एक मुस्लिम से उससे कुछ अधिक वांछित है जिसको केवल क़ानूनी और वैधानिक सम्बन्ध कहा जाता है और जो केवल बाहरी इताअत से पूरा हो जाता है, बल्कि वह लेहाज़ व अदब, महब्बत व कृतज्ञता की भावना भी वांछित है जिसके सोते दिल की गहराइयों से निकलते हों, और नस–नस में रच बस गयी हो, इसी भावना को कुर्आन ने ''ताज़ीम'' (मदद) व ''तौक़ीर'' (आदर) कहा हैः–

अनुवादः– *उसकी मदद (सहायता) करो उसे बुजुर्ग (बड़ा) समझो।*

इसकी ज्वलन्त मिसालें गज़्व–ए–रजीअ़ (रजीअ़ नामी युद्ध) के मौक़े पर हज़रत खुबैब पुत्र अदी और जैद बिन दसनह के वाकिए, ग़ज़्व–ए–उहद (उहद नामी युद्ध) के मौके पर अबूदुजानह और हज़रत तल्हा के व्यवहार, गज़्व–ए–उहद में बनी दीनार की मुसलमान महिला के जवाब, सुल्हे हुदैबिया के मौक़े पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ सहाबा का घनिष्ठ प्रेम और मान–सम्मान में देखी जा सकतीं हैं। जिस कारण अबू सुफ़ियान (जो उस समय तक मुसलमान नहीं हुए थे) की ज़बान से बेझिझक निकला कि ''मैंने किसी को किसी से इस तरह महब्बत करते हुए नहीं देखा, जिस तरह मुहम्मद के साथी, मुहम्मद से मुहब्बत करते हैं।'' और कुरैश के सन्देश वाहक उर्वः पुत्र मसऊद सक़फ़ी ने कहा है, मैंने किसी बादशाह की ऐसी इज़्ज़त होते हुए नहीं देखी, जिस तरह मुहम्मद के साथी मुहम्मद की इज़्ज़त करते हैं।''

इस रसूल प्रेम से महान इस्लामी विद्वानों, सुधारकों, नवीनीकरण करने वाले रहबरों को बड़ा भाग प्राप्त हुआ, जिन्होंने दीन के वास्तविक आत्मा (रूह) को अपने भीतर उतार लिया था और जिनके भाग्य में दीन मिल्लत (धर्म व सम्प्रदाय) के पुनर्जागरण का महत्वपूर्ण किर्तिमान अंजाम देना था। सच यह है कि इस पाक महब्बत के बिना रसूल के तरीक़े की पूरी पैरवी और खुदा व रसूल का आज्ञापालन मुमकिन नहीं। महब्बत की एक लहर कूड़े करकट को बहा ले जाती है तन–मन में इस तरह दौड़ जाती और रच–बस जाती हैं,

शाखे गुल में जिस तरह बादे सहरगाही का नम।

मुसलमान जो कभी ख़ुदा और रसूल के प्रेम की बदौलत शोलए जव्वालः (आलात–चक्र) थे, उसके बिना सूखी लकड़ी और राख बने हुए हैंः–

बुझी इश्क की आग अन्धेर है,
मुसलमाँ नहीं ख़ाक का ढेर है।

आदर्श शासक

—मौलाना अब्दुस्सलाम क़िदवाई नदवी रह0 —अनुवादः अतहर हुसैन

चौथे ख़लीफ़ा हज़रत अली मुर्तजा रज़ि0 का वर्णन

हज़रत अली रज़ि0 बैतुलमाल की समस्त आय रिआ़या पर ख़र्च कर देते। एक बार बैतुलमाल भर गया तो कोषाधिकारी ने सूचना दी कि क्या कार्यवाही की जाय? आपने आदेश दिया कि कूफ़े के गुरुजनों को बुला कर यह धनराशि उनके हवाले की जाय। यह हो चुका तो ख़ज़ाने को साफ़ करा के उसमें नमाज़ पढ़ी और कहने लगे, ऐ सुनहरे तथा रुपहले टुकड़ों किसी और को मोहित करना (मुझ पर तुम्हारा दांव नहीं चल सकता)।

कमली का टुकड़ाः–

जनता के माल से बहुत बचते थे। एक व्यक्ति का बयान है कि मैंने उन्हें एक बड़े महल में देखा कि कड़ी सर्दियों में एक कम्बल का छोटा सा टुकड़ा ओढ़े हैं। सर्दी की तीव्रता के कारण शरीर कांप रहा है। मैंने कहा, ''अल्लाह आप पर दया करे आख़िर आप अपनी जान के साथ यह व्यवहार क्यों करते हैं? इस बैतुल माल की आमदनी में अल्लाह ने आपका और आपके घर–बार का भी हिस्सा रखा है।'' यह सुन कर आपने कहा, ''यह कम्बल का टुकड़ा तो मैं अपने घर मदीने से लेकर चला हूं, तुम्हारे माल में से मैंने कुछ नहीं लिया है।''

हज़रत अली रज़ि0 का चरित्रः–

एक बार हज़रत मुआविया रज़ि0 ने उनके एक श्रद्धालु तथा पुराने साथी हज़रत ज़रार–इब्न ज़मरा रज़ि0 से पूछा कि अली इब्न अबी तालिब रज़ि0 के गुणों का वर्णन करो। ज़रार को हज़रत मुआ़विया रज़ि और हज़रत अली रज़ि0 के बीच मत–भेद की जानकारी थी। उन्होंने सोचा कि यदि मैं सच कहूंगा तो यह अप्रसन्न होंगे और झूठ कहना तो उन्हें गवारा न था। अतः उन्होंने क्षमा चाही। परन्तु हज़रत मुआ़विया रज़ि0 ने उनकी प्रार्थना स्वीकार न की बल्कि आग्रह किया कि हज़रत अली रज़ि0 के गुणों का वर्णन अवश्यक करें। अन्ततः हज़रत ज़रार रज़ि0 तैयार हुए। इस अवसर पर उन्होंने हज़रत अली रज़ि0 के चरित्र का जो नक़्शा खींचा है उसका पूरा विवरण देना मुश्किल है। हाँ, कुछ वाक्य नक़ल किये जाते हैं, वे कहते हैंः—

''वह दो टूक बात कहते थे, सच्चाई के साथ फ़ैसला करते थे, दुन्या और उसकी शान–शौकत से उन्हें घृणा थी।

खुर्दुरा वस्त्र पसन्द करते थे, मोटा–झोठा खाना प्रिय था, उन्हें किसी प्रकार की प्रधानता न थी। ख़ुदा की क़सम वह हमीं में के एक आदमी मालूम होते थे। जब हम सवाल करते, तो जवाब देते और बुलाते तो हमारे पास आ जाते। दीनदार (धर्मात्मा पुरुष) का सम्मान करते थे। बलवान को किसी अनुचित बात में उनकी ओर से किसी सहारे की उम्मीद नहीं होती थी और निर्बल उनके न्याय से निराश नहीं होता था। ख़ुदा गवाह है कि मैंन उन्हें रोते हुए और यह कहते हुए सुना है, ''अरी दुन्या तू मुझे रिझाने आई है, दूर हो दूर हो, मेरे अलावा किसी और को धोखा दे, मैंने तुझे तीन तलाक़ें (बिलकुल छोड़ दिया) दे दी हैं अब तुझे मुँ लगाने का कोई प्रश्न ही नहीं, तेरी आयु कम है, तेरा सुख पल भर का है, तेरे ख़तरे बड़े भयानक हैं। हाय, सामान की कमी, यात्रा की दूरी और मार्ग का भयानकपन।''

यह बयान सुन कर मुआ़विया रज़ि0 की आँखों से आँसू बहने लगे और सभा में रुदन का वातावरण उत्पन्न हो गया। हज़रत मुआविया रज़ि0 के मुख से यह शब्द निकल रहे थे–

''अल्लाह, अबुल हसन (हज़रत अली रज़ि0) पर रहम करे, ख़ुदा की क़सम वह ऐसे ही थे।''

असीम सतर्कताः–

हुकूमत के प्रभाव से विरक्त की यह दशा थी कि अगर किसी चीज़ के ख़रीदने की ज़रूरत होती, तो बड़ी कोशिश करते कि कोई उन्हें पहचानने न पाए ताकि ख़िलाफ़त के असर से किसी प्रकार की छूट न दे सके। एक बार एक क़मीस की ज़रूरत थी, आप इस रूप में बाज़ार गए कि मालूम होता था कोई बद्दू (अरब का देहाती) आ गया है। दुकानों पर क़मीस की तलाश में घूम रहे थे। यदि कोई पहचान लेता तो फ़ौरन उसके पास से चले जाते, परन्तु अमीरुल–मोमिनीन को भला कौन न पहचानता, अन्त में बड़ी कोशिश के बाद एक लड़का दिखाई दिया जिसने आपको नहीं पहचाना। उससे तीन दिर्हम में क़मीस ख़रीदी। आप क़मीस लेकर घर पहुंचे ही थे कि उस लड़के का पिता दौड़ा हुआ आया और कहने लगा, ''अमीरुल–मोमिनीन! लड़के ने ग़लती से अधिक दाम ले लिए हैं, क़मीस केवल दो दिर्हम की थी, एक दिर्हम वापस ले लीजिए।'' परन्तु आप किसी तरह राज़ी न हुए और कहा, ''यह मामला तो आपस की रज़ामंदी से तय हो चुका है अब दिर्हम की वापसी का क्या सवाल है।''

राज्य की आय से बचनाः–

फ़ाक़े पर फ़ाक़े होते, अपनी अच्छी से अच्छी वस्तु बेच डालना पड़ती, परन्तु क्या मज़ाल जो राज्य कोष की ओर नज़र भी उठे। एक बार लोगों ने देखा कि बाज़ार में

शेष पृष्ठ.....29 पर

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सहाबा

रिजवानुल्लाहि अलैहिम अजमईन भी हमारे मुताअ़ व मुकतदा हैं?

—हज़रत मौलाना सय्यिद मुहम्मद राबे हसनी नदवी— —हिन्दी लिपिः हुसैन अहमद

मुताअ़ उसे कहते हैं जिसके पीछे चला जाये जिस का अनुकरण किया जाये, मुकतदा का अर्थ भी लगभग वही है जो मुताअ़ का अर्थ है हिन्दी में उसे नेता भी कह सकते हैं तथा पथ प्रदर्शक भी कह सकते हैं।

रब्बुल आलमीन की तरफ़ से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के द्वारा मुसलमानों को दी हुई जो शरीअत (इस्लामिक विधान) है और जीवन के कल्याण तथा भलाई के लिए जो आदेश हैं वह हम को सहा–बए–किराम (नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सम्मान प्राप्त साथियों) ही से मिले हैं (अल्लाह उन सब से राज़ी हुआ) सहा–बए– किराम का ईमान व तक़्वा (विश्वास तथा संयम) इतना महान तथा सुदृढ़ था कि अल्लाह तआला की तरफ़ से अल्लाह के दीन को कुछ घटाए बढ़ाए बिना हर प्रकार सुरक्षित रख कर पहुंचाने के लिए उनको जरीअ़ा बनाया और उन्होंने आने वाली पीढ़ी तक उसको भली भांति पहुंचाया, इसी प्रकार हम तक जो दीन शुद्ध रूप में पहुंचा वह सहा–बए–किराम की सच्चाई निष्ठा तथा कर्तव्य परायणता ही के सबब पहुंचा, और सहा–बए–किराम का यह विश्वास अल्लाह तआला की तरफ़ से इस दीने इस्लाम के आदेश और उसका विस्तार बयान करने से ही प्राप्त हुआ और अन्तिम नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सहा–बए–किराम को जो प्रेम और आस्था तथा संबन्ध था उसने हम मुसलामनों के लिए उनसे प्रेम तथा आस्था रखना अनिवार्य बना दिया। इसी लिए सहा–बए–किराम हमारे लिए नेता तथा पथ प्रदर्शक (मुताअ़ व मुकतदा) बने अल्लाह उनसे राजी हुआ और वह अल्लाह से राजी हुए।

मानव समूह की सबसे हसीन तस्वीर

—मुफ़क्किरे इस्लाम हज़रत मौलाना सय्यिद अबुल हसन अली नदवी (रह0)

आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के तैयार किये लोगों में से एक एक इन्सान नुबूवत का शाहकार है और मानव जाति के लिए गर्व और सम्मान है, इन्सानियत की श्रृंखला में बल्कि इस पूरी कायनात में पैग़म्बरों को छोड़ कर उससे ज़ियादा हसीन व जमील, उससे ज़ियादा दिलकश व दिल आवेज़ तस्वीर नहीं मिलती जो उनकी ज़िन्दगी में नज़र आती है। उनका पुख़्ता यकीन, उनका गहरा इल्म, उनका सच्चा दिल, उनकी बेतकल्लुफ़ ज़िन्दगी, उनकी बेनफ़सी, ख़ुदातरसी उनकी पाकबाज़ी, पाकीज़गी, उनकी शफ़क़त व राफ़त और उनकी शुजाअ़त व जलादत (बहादुरी) उनका ज़ौक़े इबादत और शौक़े शहादत उनकी शहसवारी और उनकी शब ज़िन्दादारी, उनकी सीम व ज़र से बे परवाई और उनकी दुन्या से बेरग़बती उनका अदल, उनका हुस्न—इन्तिज़ाम, दुन्या की तारीख़ में अपनी नज़ीर (उदाहरण) नहीं रखता। नुबूवत का कारनामा यह है कि उसने जो इन्सानी अफ़राद तैयार किये, उनमें एक एक फ़र्द ऐसा था जो अगर तारीख़ की मुतवातिर (लगातार) शहादतें न होती, तो एक शाइराना तख़य्युल (काव्यात्मक कल्पना) और एक फ़रजी अफ़साना मालूम होता। लेकिन अब वह एक तारीख़ी हक़ीक़त और एक मुसल्लमुस्सुबूत (प्रमाणित) वाक़िया है, जिसमें शक की कोई गुन्जाइश नहीं।

ज़मीं खा गई आस्माँ कैसे कैसे

—हज़रत मौलाना मुहम्मद वली रहमानी —हिन्दी लिपिः हुसैन अहमद

अज़ीजम एहतिशाम सल्लमहू ने सुब्ह 9 बजे खबर दी कि मौलाना वाज़ेह रशीद नदवी साहिब अल्लाह के दरबार में हाज़िर हो गये, इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन बे इख़्तियार ज़बान से निकला, आगे कुछ कहने की गुंजाइश नहीं थी, दिमाग़ जैसे एक नुक्ते पर ठहर गया, अलहमदुलिल्लाह मौलाना ने उम्र 85 के आस पास पाई, इस उम्र को बुढ़ापे का अगला मरहला कहना चाहिए, इस उम्र में बूढ़ा जिन मसाइब व मशाकिल (कठिनाइयों) में धिर जाता है उनसे हमारे मौलाना वाज़ेह रशीद नदवी साहिब दूर थे। कहा जा सकता है कि वह अपने इरादे की ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे, इस उम्र में माजूरी, बीमारी साथी बन जाते हैं, मगर अल्लाह का फ़ज़्ले खास था वह माजूरी और मजबूरी की ज़िन्दगी से दूर थे मौत का वक़्त आचुका था, देखते देखते चले गये 15 जनवरी की रात को खा पी कर ठीक ठाक बिस्तर पर गये, तहज्जुद के लिए जागे वुजू किया, मुसल्ले की तरफ़ जाने लगे कि पेट में तेज दर्द उठा इतना कि बिस्तर पर बैठ गये, फिर बे क़ाबू हो कर लेट गये, एक तरफ़ दर्द बढ़ता रहा दूसरी तरफ अल्लाह की याद तेज़ तर होती गई आधे घण्टे की कशमकश के बाद जान देने वाले को जान देदी।

खुदा रहमत कुनदईं आशिक़ाने पाक तीनत रा

मौलाना के सफ़रे आख़िरत के बाद न जाने क्यों यह एहसास जहन के पर्दे पर उभरता डूबता रहा कि कुछ दिनों और जी लिए होते, पहले तो चारों कुल पढ़ कर ईसाले सवाब किया फिर मूंगेर फोन किया ताकि जामेआ रहमानी में खत्मे कुर्आन और ईसाले सवाब किया जाये, वहां यह ख़बर किसी तरफ़ से पहुंच चुकी थी, देर तक यादों की याद आती रही, वह याद आया मौलाना से पहले पहल की मुलाक़ात, नदवे के महमान खाना में, हज़रत मौलाना अली मियाँ रह0 महमान खाने के हाल में जल्वा अफ़रोज़, ब्रिफकेस खुला हुआ, एक साहिब क़लम कागज़ के साथ तैयार, खत लिखाया जा रहा था, मैं मुलाक़ात करके निकला दूसरी तरफ़ से एक मौलाना साहिब बर आमद हुए, शक़्ल व सूरत से समझा कि यह हसनी खान्दान के फर्द हैं, सफेद व सुर्ख रंगत, सियाह दाढ़ी, अच्छी सिली शेरवानी जेबे तन, अट्ठाइस तीस के रहे होंगे, सलाम व मुसाफे के बाद उन्होंने पूछा "आप हज़रत मूंगेरी रह0 के पोते हैं?" समझ गया कि अभी अन्दर से उन तक ख़बर पहुंची है। मैने नियाज़ मन्दाना "जी" कहा, "मेहनत से पढ़ये" उन्होंने कहा और आगे बढ़ गये, मालूम हुआ कि यह मौलाना वाज़ेह रशीद नदवी साहिब हैं, मेरी तालिबे इल्मी का ज़माना था और यह पहली मुलाक़ात थी, उचटती हुई।

फिर मौलाना से देहली में मुलाक़ात हुई। वह फर्राश

खाने में रहा करते थे, मैं मस्जिद फतेहपुरी के एक कमरे में ठहरा हुआ था, अब यह याद नहीं कि शाने नजूल क्या था मगर मैं मौलाना अमीदुज़्ज़मां साहिब के हमराह उनके घर हाजिर हुआ था। फिर दो चार मुलाक़ातें और हुईं, सरेराह, गाहे गाहे, वह आल इण्डिया रेडियो से वाबस्ता थे और किसी मेयारी मन्सब पर थे, शो—बए—अरबी से वाबस्ता थे, उस ज़माने में मरकज़े तब्लीग़ बस्ती हज़रत निजामुद्दीन अक्सर जुमेरात को जाया करते थे, यह उनके अन्दर से मुसलमान होने की अलामत थी, फिर हज़रत शैखुल हदीस मौलाना मुहम्मद जकरीया साहिब रह0 से इरादत व अक़ीदत बढ़ती रही और उनके अन्दर का मुसलमान रेडियो की नौकरी के साथ साथ अल्लाह अल्लाह करने लगा आहिस्ता आहिस्ता उन का मिज़ाज ज़िक्र व अज़कार, तस्बीह व वज़ीफा का बन गया। तसव्वुफ से खास मुनासबत हो गई। तजरिबे की बात है कि यह काफिर जब मुंह को लग जाती है तो फिर छूटती नहीं। होते होते यह हुआ कि नौकरी से दिल उचाट हो गया, हालांकि अच्छी खासी तन्ख्वाह थी, और जिम्मेदारी हल्की फुल्की, लेकिन रोडिया की नौकरी को हमेशा के लिए अलवदा कह दिया, और देहली को भी खैरबाद कह गये।

कुछ दिनों ग़ौर व फिक्र में गुज़ारा होगा, फिर इल्मे दीन की ख़िदमत के जज़्बे ने दारुल उलूम नदवतुल उलमा में तलबा को पढ़ाने उनको बनाने संवारने, उनकी तरबीयत करने में लग गये, हज़ारों से सैकड़ों की तन्ख़्वाह पर आ गये, यह 1973 ई0 की बात है, उन्हें ज़बान व अदब से बड़ी मुनासबत थी उम्र का बड़ा हिस्सा अरबी और आलमे अरब को पढ़ने में गुज़ारा, अरबी गोया मादरी ज़बान बन गई थी, ज़बान के जेर व बम से वाक़िफ, अल्फाज़ को सज़ाने और बरतने से आगाह मुतरादिफात (पर्यायवाची शब्दों) के भरे पुरे सरमाये के मालिक थे।

मगर सादगी ऐसी कि यह सारे हुनर, पैमा—नए—इल्म में झलकते न थे, बस कभी कभार लिखने और तलबा की कापियों पर इस्लाह देने में बरते जाते थे। इसलिए खामोशी और इस्तिक़ामत के साथ तलबाए दारुल उलूम नदवतुल उलमा की तरह तरह से तरबीयत करते रहे और अपनी आखिरत संवारते रहे तलबा के मज़ामीन पर बड़ी दिलचस्पी के साथ इस्लाह किया करते थे। नदवे से निकलने वाले ''अर्राइद'' के निगरां और सरपरस्त थे। ''अलबासुल इस्लामी'' के शरीके इदारत थे, और दोनों में आप के मज़ामीन आते रहते थे। उर्दू तो मादरी ज़बान थी इसमें जो मज़ामीन लिखते वह ''तामीरे हयात'' और ''राष्ट्रीय सहारा'' (रोजनामा) में छपते रहे हैं। अरबी ज़बान व अदब में महारत के साथ अरब मुमालिक की तारीख़, जुगराफिया, अरबों के फिक्री रुजहानात, और सियासी उतार चढ़ाव पर गहरी नज़र थी। मगर वह कम लिखते थे, बोलते

भी इसी तनासुब से थे, मगर तलबा के सामने खुल जाते थे। या फिर इकजरा छेड़िये फिर देखिए क्या होता है, सवाल पर सवाल कीजिए तो वह खुलते थे, वरना उनकी रिदाये इल्म पर बर्फ की चादर पड़ी रहती थी, उनका अन्दरून बहुत ठहरा हुआ था, नुमायां होने और अपने आपको ज़ाहिर करने की कोई रमक़ दिल में न थी, यह कहा जा सकता है कि जिक्र व फिक्र ने उनके जी को नफ़्से मुतमइन्ना बना दिया था। वह इज़्हार की हर क़िस्म से बेनियाज़ थे। वरना मुशाहदा यह है कि हम लोगों का किब्र ब अन्दाजे तवाज़ो हुआ करता है, और ''इज़्हार'' कि नित नये तरीक़े अपनाता है।

इतनी बासलाहीयत ज़िन्दगी के गुज़र जाने से दिल पर क्या गुजरी, कैसे कहा जाये, सोचता हूं कि हज़रत मौलाना मुहम्मद राबे साहिब मद्दा जिल्लुहू पर क्या गुज़री होगी, वह न सिर्फ हज़रत मौलाना के छोटे भाई बल्कि उनके दिन रात के साथी थे। दुख सुख के शरीक, बेदार मग़ज़ मुशीर और सर्द व गर्म के रफीक़ थे, क़ौम व मिल्लत के मसाइल पर हज़रत मौलाना को उन पर बड़ा एतिमाद था। बुढ़ापे में इन्सान को अच्छे साथी, अच्छे रफीक़ और बेहतर मुशीर की ज़ियादा ज़रूरत होती है। हज़रत मौलाना बिहम्दिल्लाह उम्र के जिस मरहले में हैं, अच्छे रफीक़ अच्छे साथी और बालिग नज़र मुशीर की ज़रूरत भी उनसे पूरी होती थी।

एहसास का यह सफर देर तक जारी रहा जब टूटा, तो ख़याल आया कि जनाज़े की नमाज़ में शिरकत की जाये, मियाँ एहतिशाम ने बताया कि इन दिनों पटने से लखनऊ के लिए सिर्फ एक फ्लाइट है, वह भी रात के सवा आठ बजे, मालूम हुआ कि जनाज़े की दूसरी नमाज़ बादे मगरिब रायबरेली में होगी मगर पहुंचने की कोई राह नहीं थी, न बराहे रास्त लखनऊ और न बराहे देहली। फिर भी फैसला यही हुआ कि चला जाये। और रात के साढ़े नौ बजे लखनऊ पहुंचा एयर पोर्ट पर अमीर खालिद खाँ साहिब (सिक्रेट्री जनरल मिल्ली कौन्सिल यू0पी0) के बड़े भाई नदीम खाँ साहिब मुन्तज़िर थे। उनके हमराह यह छोटा सा काफिला नदवा पहुंच गया। रात महमान खाने में जागते सोते गुज़री। 17 जनवरी को दिन उठते कुछ लोग आ गये। किस्सा मुख्तसर दिन के साढे ग्यारा बजे तक्या कलाँ, रायबरेली पहुंचे, हज़रत मौलाना मुहम्मद राबे साहिब जीद मज्दुहू और अफरादे खान्दान से ताजीयत की, ताजीयत भी क्या की जाती, हादिसा जांकाह और अल्फाज़ के दामन छोटे, बस दो चार जुम्ले हज़रत मौलाना से कहे और खामोश बैठा रहा, फिर मक्बरा शाह अलमुल्लाह में फातिहा पढ़ी।

लम्बे अर्से के बाद ''तक्या'' आना हुआ, तक्या हज़रत शाह अलमुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि (1033 हि0–1096 हि0) का आबाद किया हुआ है। हज़रत शाह साहिब, हज़रत सय्यिद आदम

बिन्नोरी रहमतुल्लाहि अलैहि (मुत्यु प्राप्त 1053 हि0) से बैअत थे। उन्होंने हिज़रत इख्तियार की, कहा जाता है कि हज़रत शाह अलमुल्लाह अपने मुरशिद के हमराह जाने का अज़्म रखते थे, मगर मुरशिद ने कहा कि अगर कोई अल्लाह वाला रोके तो रुक जाना, वहीं दरया के किनारे शाह अब्दुश्शकूर मजजूब की कुटया थी। उन्होंने हज़रत शाह अलमुल्लाह को सफरे हिजरत से रोका, हज़रत शाह अलमुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि ने इस्तिखारा किया और सफर का इरादा खत्म कर दिया। वह शाहे मजजूब ‘‘हज़रत शाह अलमुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि को क़रीब ही सामने ले गये, और लकीर खींच कर बताया कि यहां आप की मस्जिद बनेगी, फिर उसके पूरब गये और निशान लगाया और कहा कि यहां आप की कब्र बनेगी, फिर मस्जिद के निशान के सामने पूरब जानिब कुछ फासिले पर गये, लकीर खींची और शाहे मजजूब ने निशान खींच कर बताया कि यहां आप का मकान बनेगा। अल्लाह तआला की मर्ज़ी यह सामने आई कि शाह मजजूब की बातें बाद में हक़ीक़त बन गईं।

हज़रत शाह अलमुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि 1083 हि0 में सफरे हज से वापस तशरीफ़ लाये, तो अपने साहिबजादों के हमराह मस्जिद की तामीर फरमाई, यह मस्जिद वहीं बनी जहां लकीर खींची गई थी। यह यादगार मस्जिद हज़रत शाह अलमुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि, हज़रत सय्यिद अहमद शहीद रह0 और कई औलिया उल्लाह की इबादतों की गवाह है।

यह मस्जिद उस ज़माने के लिहाज़ से पुख्ता थी, और आम मस्जिदों से अलग चौकोर थी, हज़रत शाह अलमुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि ताज़ा ताज़ा हज करके आये थे, उन्होंने सोचा कि कुछ तो खा–नए–काबा से मुशाबहत होनी चाहिए, इसी ज़हन की वजह से मस्जिद चौकोर बनाई, अब इस मस्जिद के उत्तर और दक्खिन छत दार हिस्से का इज़ाफा हो गया है, और सहन भी पुख्ता कर दिया गया है, एक दफा वालिदे माजिद हज़रत मौलाना मिन्नतुल्लाह रहमानी साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि तक्या पहुंचे, जुमा का दिन था। हज़रत मौलाना अलीमियां साहिब मौजूद थे, उन्होंने वालिद साहिब से जुमा की इमामत पर इसरार किया और फरमाया कि अमीरे शरीअत का हक है कि वह इमामत करे और मौजूद हाज़िरीन पर इक़्तिदा की जिम्मेदारी है।

इस मस्जिद के पूरब कुछ फासिले पर रिहाइश –गाह बनी जो शाह अब्दुश्शकूर मजजूब के निशान पर थी, इस रिहाइशगाह में ज़माने के लिहाज से तब्दीली आती रही, अभी यह इमारत पुरानी मगर पुख्ता है। इस मकान में कई अल्लाह वाले और अस्हाबे इल्म व कमाल ने आँखें खोलीं हैं, यही वह मकान है, जिसमें मशहूरे आलम अल्लाह वाले और

दीन के लिए जान निछावर करने वाले हज़रत सय्यिद अहमद शहीद रह0 (1201 हि0—1246 हि0) पैदा हुए, जिन का शौक़े जिहाद, दीनी हमीयत व गैरत और मुस्तक्बिल की फिक्र मन्दी और प्लानिंग न भुलाई जाने वाली है। हज़रत यय्यिद साहिब, हज़रत शाह अलमुल्लाह के पोते मौलाना सय्यिद मुहम्मद नूर बिन सय्यिद मुहम्मद हुदा रह0 के पोते हैं। इसी मकान का मुकद्दर था कि वह हज़रत मौलाना अब्दुल हयी हसनी रह0 और हज़रत मौलाना सय्यिद अबुल हसन अली नदवी रह0 (1333 हि0—1420 हि0) 5 दिसम्बर 1913 ई0 31 दिसम्बर 1999 ई0 का मौलद बने, कई साहिबाने दिल की जिन्दगियां इस मकान से वाबस्ता हैं, ज़रूरत के मुताबिक मकान में उत्तर जानिब इज़ाफे होते रहे हैं, और अलहमदुलिल्लाह चार सदयों से यह जगह आबाद है।

मस्जिद शाह अलमुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि के पूरब दक्खिन कोने पर सहन की इन्तिहा के साथ मक्बरा शाह अलमुल्लाह है, मस्जिद की ज़मीन से मक्बरे की ज़मीन तीन फुट ऊँची होगी। अब चहारदीवारी के अन्दर मक्बरा है। और पच्छिम जानिब इसका दरवाज़ा है। वह भी तीन फुट ऊँचा होगा। मक्बरे के अन्दर जाइये तो सब से पहले हज़रत मौलाना सय्यिद अबुल हसन अली नदवी (अली मियां साहिब) की कब्र है उन के बाद पूरब जानिब हज़रत शाह अलमुल्लाह के बड़े साहिबजादे हज़रत शाह आयतुल्लाह रह0 (वफ़ात 1116 हि0) का मज़ार है, उनकी सीध में पूरब जानिब हज़रत शाह अलमुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि आराम फरमा हैं, उनके पहलू में उनकी अहलिया मुहतरमा हैं और उनके बाद सिलसिला नक्शबन्दिया मुजद्दिदीया के साहिबे सिलसिला बुजुर्ग शाह मुहम्मद अदल साहिब (शाह लाल—वफात 1193 हि0) आराम कर रहे हैं, हज़रत मौलाना अली मियां साहिब रह0 के सरहाने मौलाना मुहम्मद सानी हसनी (वफात 1402 हि0) आराम फरमा हैं, वह माहनामा रिज़वान, लखनऊ के एडीटर थे, आसान उर्दू नस्र लिखने के माहिर, मिज़ाज में यक गोना बेखुदी और वारफ्तगी थी। बहुत डूब कर शेर कहते और एहसासे दिल को शेर के कालिब में ढाल देते थे हम लोगों के देखते देखते वह भी चले गये।

मौलाना मुहम्मद सानी हसनी रह0 के पूरब मौलाना मुहम्मदुल हसनी साहब रह0 महवे इस्तिराहत हैं, वह अरबी ज़बान व अदब के माहिर, ऊँचे दर्जे के इन्शा परदाज़, अरब के पाया के अदीबों की तरह अरबी लिखते थे, रवां दवां ज़बान, इस पर कुर्आन व हदीस के नगीने खूबसूरती से टांक देते थे। माहनाम ''अलबासुल इस्लामी'' के रईसुत्ततहरीर थे, न जाने क्या हुआ जल्द चले गये, दादा जान हज़रत मुहम्मद अली मुंगेरी रह0 की सवानेह उन्हीं ने लिखी है, उनके पूरब डॉक्टर अब्दुल अली साहिब (वफात 1381 हि0)

हज़रत मौलाना अली मियां साहिब रह0 के बड़े भाई और मुरब्बी हज़रत शाह अलमुल्लाह के ठीक सरहाने आराम फरमा हैं, उनके पूरब सय्यिद अहमद सईद रह0 इब्ने शाह जियाउन्नबी रह0 (वफात 1373 हि0) लेटे हैं, जो हज़रत मौलाना अली मियां साहिब के मामूँ और खुसर थे और उनके बाद बजानिब पूरब शाह जियाउन्नबी की साहिब जादी (वफात 1323 ई0), जो हज़रत मौलाना अली मियां की खाला हैं, आराम फरमा हैं। खान्दाने हसनी की मशहूर शख्सीयत मौलाना अबू बक्र हसनी रह0 के वालिद माजिद मौलाना अजीजुर्रहमान साहिब (वफात 1377 हि0 की कब्र हज़रत मौलाना अली मियां साहिब रह0 के ठीक दक्खिन में है। उनके बाद हज़रत मौलाना अली मियां साहिब रह0 की हमशीरा अमतुल अज़ीज़ साहिबा आराम फरमा हैं। आप के बाद पूरब जानिब हज़रत शाह अलमुल्लाह के ठीक दक्खिन पांइती में हज़रत मौलाना अली मियां साहिब के वालिद और मशहूर मुसन्निफ हज़रत मौलाना अब्दुल हयी हसनी रह0 (वफात 1341 हि0) महवे इस्तिराहत हैं। उनके बाद उनकी अहलिया खैरुन्निसा बेहतर साहिबा (वफात 1381 हि0) (वालिदा हज़रत मौलाना अली मियां साहिब रह0) का मरकद है, और उनके पूरब उनकी मशहूर आलिमा साहिबज़ादी, जादे सफर और बच्चों के लिए ''कससुल अंबिया'' लिखने वाली जनाब अमतुल्लाह तस्नीम साहिबा (वफात 1395 हि0) आराम कर रही हैं। मस्जिद के पूरब उत्तर कोने पर ढाई फुट की दीवार के अन्दर दो कब्रें हैं, एक हज़रत शाह अलमुल्लाह के साहिब जादे सय्यिद अबू हनीफा रह0 की और दूसरी हज़रत सय्यिद अहमद शहीद के वालिद माजिद मौलाना सय्यिद इरफान की कब्रें हैं।

मस्जिद के पश्चिम उत्तर हिस्से में खान्दाने हसनी के बाज़ दूसरे बुजुर्ग आराम फरमा हैं, जिन में मौलाना सय्यिद कुत्बुल हुदा रह0 जो इल्मी दुन्या का मशहूर नाम है और उनके हाथ का लिखा तिरमिजी शरीफ का नुस्खा कुतुब खाना नदवतुल उलमा लखनऊ में हमफूज़ है, उनके वालिद माजिद मौलाना वाज़ेह हसनी रह0 (वफात 1200 हि0) थे, जिन्हें सिलसि–लए–कादिरीया की इजाज़त हज़रत शाह वलीयुल्लाह मुहद्दिस देहलवी से हासिल थी। वह भी यहीं आराम फरमा हैं। हज़रत सय्यिद अहमद शहीद के खलीफ़ा मौलाना मुहम्मद ज़ाहिर हसनी रह0 भी यहीं महवे ख्वाब हैं। मशहूर मुअर्रिख और मुसन्निफ मौलाना फखरुद्दीन हसनी रह0 और हज़रत शाह जियाउन्नबी हसनी रह0 भी इसी कब्रस्तान में लेटे हुए हैं। हाल के लोगों में मौलाना अबू बक्र हसनी रह0 की आखिरी जगह यही कबरिस्तान है। मस्जिद के पश्चिम दक्खिन सम्त में मूलसरी के साया में हज़रत शाह अलमुल्लाह के एक

साहिब जादे हज़रत सय्यिद मुहम्मद जी आराम फरमा हैं। इसी दरख्त की छांव तले हज़रत मौलाना अली मियां साहिब के कई रुफका और खुद्दाम लेटे हुए हैं, जिन में मौलाना इस्हाक जलीस नदवी (मुदीर तामीरे हयात, लखनऊ) वलादत 1934 ई0 ब मुकाम पूना वफात 1399 हि0 1979 ई0) मौलाना अनवार नदवी, मौलाना नियाज़ अहमद नदवी, भाई अब्दुर्रज़्ज़ाक साहिब और मौलाना निसारुल हक़ नदवी साहिब हैं, मौलाना निसारुल हक़ नदवी बड़ी खूबियों के मुख्लिस इन्सान थे, बहादुरपुर, सीवान बिहार के रहने वाले, हज़रत मौलाना अली मियां साहिब के कातिब थे, हज़रत मौलाना और उन का शाने खत बहुत मिलता था। तक्या पर जो लोग तावीज़ की फरमाईश करते उनकी यह ज़रूरत वही पूरी करते थे, तक्या और खानक़ाह को तावीज़ से छुट्टी नहीं मिलती।

मस्जिद के ठीक उत्तर थोड़े फासिले पर शिकस्ता चहार दिवारी दो ढाई फुट ऊँची है, जिसमें हजरत शाह अलमुल्लाह के साहिब जादे मौलाना सय्यिद मुहम्मद हुदा और उसी खान्दान के मौलाना मुहम्मद निसार रह0 की मिटी मिटी सी कब्रें हैं।

मौलाना अब्दुल्लाह हसनी साहिब की आखिरी आराम गाह यहीं बनी, जो दारुल उलूम नदवतुल उलमा के ऊँचे दर्जे के उस्ताद और तक़्वा व तहारत में मुम्ताज़ थे, उनके पूरब मौलाना वाज़ेह रशीद नदवी (वफात 1440 हि0) के लिए जगह चुनी गई और चन्द घण्टों कब्ल वह पैवन्दे ज़मीं हो गये।

यहां कुछ अरबी जुम्ले दुआओं के हैं और फारसी के सबक आमोज मिस्रे हैं जिनके मफ्हूम का खुलासा इस तरह है:—

कच्ची कब्रो में अल्लाह के मक्बूल बन्दे आराम कर रहे हैं, हर तरफ खामोशी है, सुकून है इतमीनान है रहमत का नुजूल है।

अल्लाह तआला इन सब पर रहम फरमाये उन्होंने मुसलमानों के लिए और इस्लाम के लिये जो कोशिशें और मेहनतें की हैं उनको कबूल फरमाये, अल्लाह उनसे राजी हो जाये और जन्नत में दाखिल करे,

आमीन।

अब रवानगी का वक्त था हज़रत मौलाना मुहम्मद राबे साहिब मद्दजिल्लुहू ने बार बार खाने के लिए कहा, मगर ख्वाहिश बिल्कुल न थी, दोपहर ही में थके क़दमों, शिकस्ता दिल और बोझल दिमाग के साथ कार पर आ बैठा, देर हो चुकी थी, अब चौधरी चरण सिंह एयर पोर्ट लखनऊ पहुंचना था, रवाना हो गया, मन्ज़िल आई तो मालूम हुआ कि जहाज़ ढाई घण्टे ताखीर से आ रहा है। वक़्त का अच्छा मसरफ था कि मौलाना वाज़ेह रशीद नदवी पर कुछ लिख दिया जाये, और एयर पोर्ट की हमाहमी के दरमियान यह सतरें पूरी हो रही हैं।

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्न: एक शख्स कारोबार में किसी के माल की बिकरी करता है और उसकी रक़म में से कुछ फीसद वसूल करता है तो क्या यह जाइज़ है?

उत्तर: अगर कमीशन वसूल करने वाला साहिबे माल से फीसद वसूस करने पर मुआहदा करता है तो वह जितना माल बिकरी करेगा, उस पर उतनी फीसद उजरत मिलेगी। इसकी गुंजाइश है लेकिन अगर साहिबे माल के इल्म में लाये बगैर कुछ फीसद रख लेता है तो यह खियानत का दर्जा है, और नाजाईज़ है।

(रद्दुल मुहतारः 1/87)

प्रश्न: बाज़ कम्पनियों में हर साल माली साल के ख़त्म होने पर मुलाज़िम को बोनस दिया जाता है और यह कम्पनी की तरफ़ से बतौरे इनआम होता है, क्या इस का लेना जाइज़ है?

उत्तर: किसी शख्स या इदारा के लिए यह बात बिल्कुल जाइज़ है कि वह अपने मुलाज़िमीन को और काम करने वालों को बतौरे तुहफ़ा व इनआ़म के कोई चीज़ दे लिहाजा इस का लेना दुरुस्त है और यह हिबा माना जायेगा।

प्रश्न: एक शख्स की ज़मीन है, वह इन दिनों बेचना चाहता है उन साहिब का कहना है कि अगर आप इस ज़मीन को बिकवा दें तो ज़मीन की क़ीमत का दो फीसद आप को बतौर मेहनताना दे दिया जायेगा तो क्या ऐसा करना जाइज़ है?

उत्तर: मज़्कूरा सूरत में हस्ब मुआहदा दो फीसद वसूल करना जाइज़ है, यह मुआमला ताजिरों के उर्फ में दल्लाली कहलाता है, फुकहा ने ख़रीद व फ़रोख़्त के मुआमले में कमीशन वसूल करना जब कि मुआहदा हो और फीसद मुतअय्यन हो, जाइज लिखा है।

(रद्दुल मुहतारः1/87)

प्रश्न: एक शख्स कम्पनी के तहत काम करता है, कम्पनी वाले कभी कभी उसको गाड़ी से सामान पहुंचाने के लिए भी भेज देते हैं जिसमें उमूमन लोहे वगैरा का सामान होता है लेकिन बसा औक़ात मकरूह चीज़ें भी भेजी जाती हैं और उसे इस पर उजरत मिलती है तो क्या उसके लिए उजरत लेना जाइज़ है?

उत्तर: मज़्कूरा सूरत में गाड़ी पर सामान ले जाने की उजरत लेना उसके लिए जाइज़ है, अगर उसमें कुछ मकरूह चीज़ें हों, लेकिन उन की हैसीयत ताबे की हों तो उसमें कोई हरज नहीं है।

(रद्दुल मुख्तारः 1/562)

प्रश्न: एक शख्स का एक मैरेज हाल है उस में औरतों और मर्दों के खाने का अलग अलग इन्तिज़ाम है, हाल किराये पर लेने वालों को गाने बजाने से मना किया जाता है लेकिन कभी कभी

कुछ लोग इत्तिला दिये बगैर गाना बजाना और रक़्स वगैरा करते हैं तो क्या उसके लिए इसका किराया लेना जाइज़ है?

उत्तर: मैरेज हाल बनाना और उसको किराये पर चलाना फी नफ्सिही जाइज़ है लेकिन मालिक के लिए ज़रूरी है कि वह उस में लोगों को गाने बजाने से मना करे और इत्तिला दिये बगैर लोग गायें बजायें तो मालिक से इसका मुआखजा नहीं किया जायेगा और उसका किराया लेना दुरुस्त है। (दुर्र मुख्तारः 1/69)

प्रश्न: डॉक्टर का अपना लाइसेन्स दूसरे को बेच कर उजरत वसूल करना कैसा है?

उत्तर: लाइसेन्स हुक्मन न होने की वजह से नाकाबिले इन्तिफाअ़ है और कानूनन जुर्म है, लिहाजा इसको बेच कर उजरत वसूल करना शरअ़न दुरुस्त नहीं है। लाइसेन्स हुकूमत की तरफ़ से दिया जाता है उसको ऐसे के हाथ बेच देना जिस ने हुकूमत की तरफ़ से लाइसेन्स नहीं हासिल किया है यह खुला हुआ धोखा और क़ानूनन व शरअ़न जुर्म है।

प्रश्न: एक ग्राहक दुकान पर आता है, और एक माल पर बैअ़ाना दे जाता है, और शर्त यह लगाता है कि अगर मैं दो माह तक न आऊँ और माल न ले जाऊँ तो मुझे बैआने पर कोई इख्तियार न होगा, क्या इस तरह का मुआमला करना और ग्राहक के न आने पर बैअ़ाने की रक़म ले लेना शरअ़न जाइज़ है?

उत्तर: माल न लेने की सूरत में बैअ़ाने की रक़म दुकानदार के लिए लेना जाइज़ नहीं है, बल्कि माल न लेने की सूरत में भी ग्राहक को हक़ है कि वह अपनी रक़म वापस ले जाये और दुकानदार उसे वापस कर दे।

प्रश्न: किस कम्पनी में एक मुलाज़िम को दूसरे कारखाने में जा कर अपनी कम्पनी के लिए ज़रूरत की चीज़ें ख़रीद कर लाने की ज़िम्मेदारी दी, यह शख़्स कारखाने वालों से यह साज़ बाज़ करता है कि तुम अपने मुकर्रर करदा दाम से ज़ाइद क़ीमत लगा दो, और कम्पनी से बिल वसूल करने पर ज़ाइद रक़म मुझे लौटा दो, क्या मज़्कूरा मुलाज़िम का यह अमल और कारखाने वालों का इस किस्म का बिल बनाना गुनाह नहीं है?

उत्तर: मज़्कूरा मुलाज़िम का ग़लत बिल बनवा कर मालिक का पैसा लेना खियानत और अज़ीम गुनाह है, और कारखाने वालों का इस क़िस्म का ग़लत बिल बना कर देना भी सख़्त गुनाह है और गुनाह के कामों में मदद है, कुर्आन मजीद में इसकी खुली मुमानअ़त आई है।

तर्जुमाः "और गुनाह और ज़ियादती में एक दूसरे की मदद न करो" (अल माइदा:2) लिहाजा इस से बचना ज़रूरी है।

❖❖❖

सफलता (कामयाबी)

—डॉ0 हारून रशीद शिद्दीक़ी

एक विद्यार्थी दस्वीं की परीक्षा देता है और परीक्षा में अच्छे नम्बर लाता है उसे सफलता मिलती है इस सफलता से उसको यह लाभ मिलता है कि वह ग्यारहवीं क्लास में प्रवेश का अधिकारी हो जाता है। इसी प्रकार हर क्लास की सफलता है एक कन्डीडेट किसी नौकरी की प्राप्ति की परीक्षा में बैठता है वह उसमें सफल हो जाता है, इस सफलता से उसको यह लाभ मिलता है कि जिस नौकरी के लिए उसने परीक्षा दी है वह नौकरी उसे मिल जाती है और उसका जीवन सफलता से बीतने लगता है।

एक किसान अपने खेत में मेहनत करता है खेत अच्छी तरह तैयार करता है उसमें गेहूं बोता है, गेहूं उगता है, उसकी खाद पांस और सिंचाई से खिदमत करता है, गेहूं की फसल पूरी तरह ओला पाला से सुरक्षित रहती है, फसल तैयार हो जाती है उसे काट कर गेहूं निकाल कर अपने घर लाता है यह किसान सफलता प्राप्त करता है, इस सफलता का उस को यह लाभ मिलता है कि उसे ग़ल्ला मिल जाता है जिसे वह और उसका परिवार खाता है, और बचा रहता है तो उसे बेच कर जीवन की अपनी दूसरी आवश्यकताएं पूरी करता है। और बिका हुआ गेहूं देश में उन लोगों के काम आता है जो किसान नहीं हैं और दूसरे काम करते हैं, इसी प्रकार संसार के दूसरे कामों को सोचिए और उन पर ध्यान दीजिए कि यह उद्योगी अपने उद्योग में सफलता प्राप्त करके अपने और दूसरों के जीवन को सफल बनाता है।

देश में पार्लियामेन्ट तथा विधान सभा या पंचायत का चुनाव होता है, लोग उसकी सदस्यता के लिए खड़े होते हैं और अपनी सफलता की अनथक कोशिश करते हैं। इसमें जीत कर कुछ सफलता प्राप्त करते हैं तो कुछ हार कर विफल हो जाते हैं। जो सफलता प्राप्त करते हैं वह देश की सेवा करते हैं। तथा अपना और अपने परिवार का सफल जीवन बिताते हैं।

प्रिय पाठको! यह सांसारिक सफलताएं हैं, जीवन के लिए इनकी भी आवश्यकता है संसार में कौन है जो स्वस्थ्य तथा समृद्ध रहने का इच्छुक नहीं, सब चाहते हैं कि उनका

जीवन सुखी बीते, दुख तो मनुष्य विवश हो कर ही सहन करता है, परन्तु प्रिय पाठको क्या यह जीवन सुखी बीते इसी का नाम सफलता है? नहीं–नहीं हम और आप सभी ईमान वाले मानते हैं कि इस जीवन के पश्चात एक लम्बा जीवन कब्र का है, फिर कियामत आएगी जिसमें इस ज़िन्दगी का लेखा जोखा होगा फिर अगला शाश्वत जीवन आरम्भ होगा जो सदैव का जीवन होगा, उस जीवन के दो प्रकार होंगे या सदैव जहन्नम या सदैव जन्नत। जहन्नम में आग ही आग है उसमें सदैव जलना है वहां मौत नहीं है दुख ही दुख है, अल्लाह तआला जहन्नम के अज़ाब से बचाए, आमीन।

प्रिय पाठको! जन्नत में सुख ही सुख है हर प्रकार का सुख वहां की नेमतों की तो कल्पना भी संभव नहीं है ''जो जहन्नम की आग से बचा लिया गया और उसको जन्नत का प्रवेश मिल गया निःसंदेह वह सफल हुआ।

(आले इमरानः185)

प्रिय पाठको! यह सफलता कैसे प्राप्त हो? अल्हम्दु लिल्लाह इसे हर मुसलमान जानता है केवल याद दिलाना है यह सफलता दीन अपनाने और दीन पर चलने ही पर प्राप्त हो सकेगी। पवित्र कुर्आन में है, अनुवाद– ''जिसने अल्लाह और उसके रसूल का आदेश माना वह बड़ी सफ़लता के साथ सफल हुआ।

(अहजाब–71)

प्रिय पाठको! दीन पर चलने ही का नाम अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आदेशों का मानना है। अतः हमको दीन की अहम बातों को सामने रखना चाहिए और वह यह हैं:–

अल्लाह पर ईमान जैसा कि वह अपने नामों और सिफतों (गुणों) के साथ है, उसके फिरिश्तों को मानना उसकी उतारी हुई किताबों को मानना और यह मानना कि उसकी अन्तिम किताब पवित्र कुर्आन है, उसके रसूलों को मानना और यह मानना कि उसके अन्तिम रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं और अब नजात (मोक्ष) उन्हीं के अनुकरण पर निर्भर है, क़ियामत के दिन पर ईमान लाना और तक़दीर पर ईमान लाना अच्छी हो या बुरी वह अल्लाह ही की तरफ़ से है और गवाही देना कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई और माबूद (पूज्य) नहीं है और गवाही देना कि मुहम्मद अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हैं। प्रतिदिन पाँच समय की नमाज़ अच्छे ढंग

से पढ़ना, रमज़ान के रोज़े रखना, माल हो तो उसकी सालाना ज़कात देना, सामर्थ हो तो जीवन में एक बार हज़ करना यह बहुत ही अहम बातें हैं, और यह तय कर लेना कि पूरा जीवन अल्लाह के नबी सल्ललहु अलैहि व सल्लम की शिक्षाओं के अनुसार बिताएंगे, इनशाअल्लाह, वास्तविक सफलता प्राप्त होगी, दुन्या को त्यागना सफलता नहीं है अपितु दुन्या को दीन के अनुकूल बिताना सफलता है, अल्लाह तआला हमारी दुन्या भी अच्छी करे और आखिरत भी और जहन्नम की आग से बचाए।

आमीन!

❖❖❖

.आदर्श शासक ....

खड़े हुए अपनी तलवार बेच रहे हैं और कह रहे हैं, ''ख़ुदा की क़सम यह वह तलवार है जो अनेकों बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने से संकट दूर करने में काम आई है। यदि मेरे पास एक तहबन्द ख़रीद सकने के लिए पैसे होते तो मैं इसे कदापि न बेचता।

कड़ी जाँच पड़तालः–

रिआया के माल से बचने की एक और घटना सुनिए। एक बार कहीं से उपहार स्वरूप शहद और घी के कुछ पीपे आ गए, परन्तु आपकी संयम शीलता तथा सावधानता के कारण यह कैसे गवारा था कि शासक होने की दशा में उपहार स्वीकार करें। आपने वह कनस्टर घर से मंगवा भेजे। जब आपके सामने लाए गए तो उसमें कुछ कमी मालूम हुई। पूछने पर ज्ञात हुआ कि उपहार की वस्तु समझ कर आपकी सुपुत्री हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ि0 ने थोड़ा सा ले लिया है। आपने जानकारों को बुला कर निकले हुए घी तथा शहद की क़ीमत का अन्दाज़ा कराया। उन लोगों ने पांच दिर्हम क़ीमत निर्धारित की, आपने उम्मेकूल्सूम रज़ि0 से इतनी रक़म मंगवा कर राज्य कोष में दाख़िल कर दी, तब कहीं चैन आया।

पूछ–ताछः–

एक बार सुपुत्री के पास एक मोती दिखाई दिया। आपने पूछा बैतुल माल का यह मोती तेरे पास कहां से आया?'' उनकी क्रोधातुर दृष्टि को देख कर लड़की बेचारी घबरा गई और उससे कुछ कहते–सुनते न बना। आपने डाँट कर कहा, ''बता तूने यह मोती कहां से पाया?'' नहीं तो चोरी के अपराध में हाथ काट दूँगा।'' हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म के सेवक हज़रत अबूराफ़े रज़ि0 कोषाध्यक्ष थे। उन्होंने मामले की नज़ाकत जान कर तुरन्त ही कहा कि मैंने स्वयं बच्ची के श्रृंगार हेतु उसे यह मोती दिया था, तब कहीं बेचारी लड़की की जान बची।

❖❖❖

जारी.............

–हिन्दी लिपि में उर्दू

एक मिसाली ज़िन्दगी

(एक आदर्श जीवनी)

–मौलाना सय्यिद मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी

अ़म्मे मुहतरम व मुकर्रम हज़रत मौलाना सय्यिद मुहम्मद वाज़ेह रशीद ह़सनी नदवी रह0 का सानि–हए–इरतिहाल पूरी मिल्लते इस्लामिया खुसूसन नदवतुल उलमा के लिए अज़ीम खसारा है, मौलाना अपनी ज़ात में एक अन्जुमन और इल्म व ह़िकमत और दानिश व आगही का एक समन्दर थे, अदब व सहाफत, इस्लामी फिक्र व सक़ाफत और मगरिबी फिक्र व सक़ाफत के जाइज़ा के मैदान में नुमायां मुक़ाम के हामिल थे अरबी ज़बान व अदब के पहलू ब पहलू इस्लामी फिक्र और मगरिबी फिक्र मौलाना का खास मौजूअ़ था, आप का इल्म व फज़्ल बहुत गहराई लिए हुए था और अदब मौलाना की ज़िन्दगी का कोई तफरीही मशगला नहीं था बल्कि दीन की खिदमत का ज़रीअ़ा था।

अ़म्मे मुहतरम (चचा जान) की एक अहम खुसूसीयत इल्म में वुसअत व गहराई है, आपने अपना मुताला कभी किसी एक फिक्र व ख़्याल या एक तहज़ीब व तमद्दुन तक महदूद नहीं रखा, बल्कि "अच्छी चीजें ले लो और बुरी चीजें छोड दो" के उसूल पर अमल करते हुए मुखतलिफ़ जिहतों से फाइदा उठाया, अ़म्मे मुहतरम के यहाँ तअ़स्सुब व गुरोह बन्दी या तंग नज़री का गुज़र नहीं था बल्कि इस्लाम की ख़िदमत जहां भी हो रही होती, उसकी क़द्र करते और हिम्मत अफ्ज़ाई करते थे।

हज़रत मौलाना रह0 वक़्त ज़ाये नहीं करते थे फुजूलगोई, मजलिस आराई से दूर थे, पढ़ने–पढ़ाने और इस्तिफादा व इफादा की मशगूलीयत या फिर तहरीर व मक़ाला नवीसी और तलबा की तालीम व तरबीयत से हमेशा मतलब रखा, दूसरों की ऐबजोई तो बहुत दूर की बात है, आपके यहां तो उन मुबाह उमूर की भी गुंजाइश नहीं थी जो न दुन्या में सूदमन्द और न ही आख़िरत में कारआमद होते हैं, इल्म की ख़िदमत, इबादत और हुस्ने सुलूक आपकी खास सिफत थी।

तालीम व तरबीयत के बाब में से मुअस्सिर चीज़ उस–वए–हसना है, नबीये अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हयाते तय्यिबा उसकी सब से जामे और मुकम्मल मिसाल है, क़ुर्आन करीम ने एक तरफ़ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुस्ने अख़्लाक़ की तारीफ़ करते हुए कहा है– तर्जुमाः "बेशक आप ऊँचे अख़्लाक़ वाले हैं" और दूसरी तरफ़ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के उस्वा के इत्तिबा की दावत देते हुए कहा है,

तर्जुमाः "तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह का उम्दा नमूना मौजूद है" मौलाना उसी उस–वए–नबवी का बेहतरीन नमूना थे, आप की ज़िन्दगी मिसाली थी, ज़ुहद व तक़्वा उन का शिआ़र था, तवाज़ो व इन्किसारी आप की खास सिफ़ते सानिया थी, ऐब जोई से पाक, रियाकारी और नाम व नमूद से कोसों दूर रहे अख़्लाक़े हसना का पैकर थे। हिल्म व मुरूवत का नमूना थे।

हज़रत मौलाना इसी के साथ खान्दानी तअल्लुक़ात को निभाने वाले थे, खान्दान के बच्चों के लिए इन्तिहाई शफीक़ और महब्बत करने वाले बुज़ुर्गे खान्दान थे, इसी तरह अपने तलबा के लिए शफीक़ उस्ताद और उनके मसाइल को हल करने में कोशां रहते थे।

आप की खास सिफत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से महब्बत व शैफ़्तगी और इत्तिबाए सुन्नत थी। इसी के साथ सहा–बए–किराम रज़ि0 से महब्बत व अ़कीदत में खास इम्तियाज़ रखते थे और इस बारे में ज़रा सी कोताही को बर्दाश्त नहीं करते थे और सहा–बए–किराम रज़ि0 के मरतबे में ज़रा सी कमी को ईमान की कमज़ोरी जानते थे और आपने अपनी वफ़ात से चन्द रोज़ क़ब्ल सहा–बए–किराम के हालात पर किताब "सहा–बए–किराम रज़ि0 की मिसाली जिन्दगी" भी तहरीर की थी जो इस मैदान में रोशन चिराग की हैसियत रखती है।

इब्तिदाई ज़िन्दगी ही से हज़रत मौलाना सय्यिद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0 की खुसूसी तरबीयत में रहे, उनकी पूरी तालीम और तरबीयत हज़रत मौलाना रह0 की निगरानी और हिदायत में हुई हत्ता की उसी सांचे में ढल गये जो हज़रत मौलाना रह0 का बनाया हुआ था और उनके नज़रीयात इनके नज़रीयात बन गये और दीनी व दुन्यावी उमूर में वह अपने अज़ीम मामूँ का नमूना बन गये और पूरी ज़िन्दगी इसी राह पर गुज़ारी।

अपने वालिदैन के सआदत मन्द फरजन्द और एक खिदमत गुज़ार बेटे के हैसीयत से अपना वक़्त गुज़ारा, और अपने बिरादरे मुअज़्ज़म हज़रत मौलाना सय्यिद मुहम्मद राबे हसनी नदवी नाज़िम नदवतुल उलमा के साथ हर जुमेरात को बस या रेल से रायबरेली जाते और वालिदैन की ख़िदमत में हाजिर होते और जुमा की शाम को नदवा वापस आते थे। इस मामूल में कभी नाग़ा न होता। तबीअ़त की खराबी भी आड़े नहीं आती, अपने वालिदे मुहतरम की वफ़ात के बाद बरसों वालिदा जब तक हयात रहीं, यह मामूल जारी रहा, सख़्त सर्दी हो या सख़्त बारिश, या गर्मी की शिद्दत हो, इसमें तसाहुली नहीं होती।

शेष पृष्ठ .....38 पर

परीक्षा की तैयारी

—शमीम इक़बाल खाँ

परिक्षार्थी को चाहिए कि सम्बन्धित विषय का, चाहे वह अध्यापक द्वारा तैयार कराये गये नोट के रूप में हो अथवा किताबों से विषय तैयार किया गया हो या किताबों की सहायता से नोट तैयार किये गये हों, घहराई से अध्ययन किया जाये और उन्हीं विषय वस्तु के आधार पर विभिन्न प्रकार से प्रश्न बनाने का अभ्यास किया जाये, इससे विचारों की विविधता को बल मिलेगा तथा प्रश्नों को समझने में आसानी होगी।

निबन्धात्मक परीक्षा में यदि समय पर उचित नियन्त्रण न रखा जाये तो उन प्रश्नों के उत्तर लिखने में अधिक समय नष्ट हो सकता है, जो भली भांति तैयार हों, बल्कि ऐसे प्रश्नों के उत्तर लिखने में अन्य प्रश्नों को दिये गये समय की अपेक्षा कम समय में पूरा करना चाहिए, प्रत्येक आसान प्रश्नों से कुछ न कुछ समय अवश्य बचाना चाहिए ताकि उन प्रश्नों को हल करने में कुछ अधिक समय दे सकें जो कम तैयार हों।

यदि सभी प्रश्नों के हल करने के पश्चात जो समय बच जाता है उसमें उत्तरों को दोहराया जा सकता है। और इस दोहराई के समय में कुछ नये विचार भी आ सकते हैं जिनका समावेश किया जा सकता है।

प्रथम विचार का अंकनः—

प्रश्न—पत्र प्राप्त होने पर प्रथम बार जब प्रश्न—पत्र पढ़ा जाये तो पढ़ते समय जो विचार मन में उभरें उन्हें बिन्दुओं के रूप में प्रश्न के बाईं ओर अंकित करते रहें इससे यह सुविधा होगी कि जब उत्तर लिखने का कार्य प्रारम्भ किया जाये तो उस समय सोच—विचार पर अधिक समय नहीं गवाना पड़ेगा। यह भी हो सकता है कि प्रश्न पढ़ते समय जो विचार बिन्दु के रूप में अंकित कर लिया है, उत्तर लिखते समय वे विचार याद न आयें, प्रश्नों के उत्तर लिखते समय तीव्र गति बनायें रखें और किसी प्रश्न पर अधिक समय न लगायें।

उत्तर का गठनः—

प्रश्नों को दुबारा पढ़ने से प्रश्न और अधिक स्पष्ट हो जाता है, प्रश्न पत्र को पहली बार पढ़ने पर जो बिन्दु प्रश्नों के साथ अंकित किये गये थे, प्रश्न को दुबारा पढ़े जाने पर कुछ बिन्दु और भी बढ़ सकते हैं, अब इन्हीं बिन्दुओं को क्रम के अनुसार विस्तार के साथ लिख सकते हैं।

यदि उत्तर को एक—आध पैराग्राफ में लिखना है तो प्रश्न का उत्तर सीधे तरीके से अंकित कर दें अन्यथा यदि उत्तर को विस्तार के साथ अंकित किया जाना है तो इन बिन्दुओं को तार्किक क्रमबद्धता के आधार पर अंकित किया जाना चाहिए।

स्पष्ट उत्तर के तीन नियमः—

निबन्धात्मक प्रश्नों के

उत्तर को तीन प्रकार से लिखा जा सकता है–

1. किसी प्रश्न का उत्तर खिलने के लिए, उत्तर का प्रारम्भ प्रश्न के वाक्य से ही किया जा सकता है–

उदाहरण–

प्रश्न–मुग़ल साम्राज्य के पतन के क्या कारण?

उत्तर–मुग़ल साम्राज के पतन के निम्न कारण थे–

1..........

2...........

3............

इस प्रकार से प्रश्न के उत्तर का प्रारम्भ किया जा सकता है।

2. प्रश्न के उत्तर को पहले पैराग्राफ में समेटा जाये और बाद के पैराग्राफों में इसी बात को विस्तार से अंकित किया जाये, यह विवरण, सम्बन्धों, कारणों, घटनाओं, प्रभावों, दिनांक, नाम, उदाहरण अपवाद आदि पर आधारित होने चाहिए, इन बिन्दुओं का वर्णन उपयुक्त स्थान पर ही होना चाहिए।

3. उत्तर स्पष्ट और आसानी से समझ में आने को स्पष्ट करने वाले शब्दों का ही प्रयोग किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए किसी बात का आशय स्पष्ट करने के लिए लिखा जाये ''जिस का आशय है कि ...'' किसी कार्य को निश्चित रूप से करने के लिए कहा जाये ''कृपया सुनिश्चित करें कि ....'' तुल्नात्मक भावों को प्रकट करने के लिए लिखा जायेगा ''एक तरफ़ तो...... दूसरी तरफ़.........'' आदि।

चालाकी बनाम नालायकीः–

बहुत से परीक्षार्थी निबन्धात्मक परीक्षाओं में प्रश्नों का उत्तर लिखते समय बड़ी चतुराई का परिचय देते हैं, वे समझते हैं कि उत्तर के रूप में एक दो पृष्ठ लिख दिये जायें भले ही वास्तविकता से इसका दूर का भी सम्बन्ध न हो, उत्तर लिखना प्रश्न के अनुसार ही आरम्भ करेंगे परन्तु बीच में अनावश्यक बातों का भण्डार भर देंगे, रायटिंग भी बिगड़ी हुई होगी ताकि परीक्षक इसे पढ़ने की चेष्टा न करे और यह सोच लें कि इतना बड़ा उत्तर लिखा है तो ठीक ही होगा भले ही उत्तर का मूल प्रश्न से दो–चार शब्दों के अलावा दूर दूर का सम्बन्ध न हो, एक प्रश्न का उत्तर खराब लिखावट में, निम्न प्रकार लिखा गया था–

''भारत वर्ष में मुग़ल साम्राज के पतन का कारण यह था कि उस समय फ़िल्म मुग़ले आज़म नहीं बनी थी। और अगर बनी भी होती तो उससे कोई फ़रक नहीं पड़ना था क्योंकि शहज़ादा सलीम और कनीज़ अनार कली के प्रेम प्रसंग को बहार के अतिरिक्त अकबर बादशाह ने स्वयं खूब उछाला था, इस प्रकार से जनता की सहानुभूति अकबर के साथ हो गई और अकबर महान बन गये परन्तु सलीम को जनता ने नकार दिया और यही बात मुग़लों के पतन का कारण बनी''

यदि कोई परिक्षार्थी उक्त प्रकार से मनगढन्त कहानी बना सकता है तो बेशक वह प्रतिभावान है, ऐसे लोग अपनी शक्ति को परखें, अपनी प्रतिभा को जगायें, अगर उन्होंने एक बार भी

सम्बन्धित विषय का अध्ययन किया होता है तो वह उत्तर को सम्बन्धित वस्तुस्थिति के साथ, बहुत अच्छे ढंग से लिख सकता है, यह सब तभी होता है जब परीक्षा की तैयारी उचित प्रकार से न की हो तथा परीक्षा के मध्य परेशानी तथा तनाव अनुभव करता है, ऐसे लोग उन कामों में भी छोटी–छोटी त्रुटियां करने लगते हैं जो नित प्रति वे करते रहते हैं।

जो लोग किसी प्रतियोगिता से सम्बन्धित परीक्षा देने वाले होते हैं प्रायः मानसिक दबाव में धिरे हुए पाये गये हैं क्योंकि उन्हें अपने लक्ष्य की चिन्ता लगी रहती है कि क्या वे इसे प्रापत कर सकेंगे? इसी के परिणाम स्वरूप दिल की धड़कने बढ़ जाती हैं, सांसों की गति बदल जाती है, हाथ पैरों में कपकपाहट, पसीना आना, जी मिचलाना आदि पेरशानियां घेर लेती हैं और एगाग्रता समाप्त हो जाती है, ऐसी दशा में निराशाजनक बातें सोचने लगते हैं और अपने को असहाय महसूस करने लगते हैं, परीक्षा की तैयारी के प्रयत्नों को भुला कर विभिन्न प्रकार की चिन्ताओं से धिर जाते हैं।

इस प्रकार की परि–स्थितियों से परिक्षार्थी तभी धिरता है जब वह परीक्षा की तैयारी उचित प्रकार से न कर सके, किसी भी परीक्षा के लिए उचित एंव समयबद्ध अध्ययन नितान्त आवश्यक होता है, परीक्षा उत्तीर्ण करने की इच्छाशक्ति का बहुत महत्व होता है, शहरों में कई ऐसी शिक्षण संस्थायें हैं जहां से उचित प्रकार से अध्ययन करने की विद्या सीखी जा सकती है। समय बद्ध अध्ययन और दोहराई किसी भी परीक्षा पास करने की जमानत है।

''थोड़ी सी लापरवाही, जिन्दगी भर की परेशानी'', यह नारा आपने सुना होगा, यदि परिश्रम में थोड़ी भी कमी रह गई तो परीक्षा पास नहीं की जा सकती और यदि पास भी हो गये तो आवश्यक नहीं है कि चयन भी कर लिये जायें क्योंकि कम्पटीशन बहुत बढ गया है, अधिक परश्रिम करने तथा अधिक अंक पाने वाले लोग भी हैं।

परीक्षा और कम्प्यूटरः–

पिछले कई वर्षों से प्रायः परीक्षा का कार्य कम्प्यूटर द्वारा कराया जा रहा है, कम्प्यूटर से उत्तर पुस्तिकायें जांची भी जाती हैं और परीक्षाफल भी छापे जाते हैं, एक उत्तर पुस्तिका के मूल्यांकन करने में कम्प्यूटर मात्र एक संकेण्ड का समय लगाता है, इस प्रकार दस हज़ार उत्तर पुस्तिकाओं का मात्र दो घण्टे सात मिनट में परिणाम बन सकता है। निबन्धात्मक परीक्षाओं की उत्तर पुस्तिकायें कम्प्यूटर द्वारा नहीं जांची जा सकती हैं केवल रिज़ल्ट बनाये जा सकते हैं। वस्तुनिष्ठ परीक्षाओं की उत्तर पुस्तिकायें ही कम्प्यूटर द्वारा जांची जा सकती हैं। यह उत्तर पुस्तिकायें विशेष प्रकार के कागज़ और विशेष प्रकार की छपाई की होती हैं। इन पर उत्तर भी विशेष प्रकार से अंकित किये जाते हैं। उत्तर

पुस्तिका में वृत्ताकार अथवा वर्गाकार खाने बने होते हैं, किसी प्रश्न के सही उत्तर के लिए सम्बन्धित गोले अथवा वर्ग को डाट–पेन अथवा एच.बी. पेन्सिल से (जैसा निर्देश हो) भरना होता है।

उत्तर पुस्तिका में उत्तर अंकित करना एक विशेष प्रकार का कार्य होता है जिसे ध्यानपूर्वक करना चाहिए। उत्तर पुस्तिका पर दो प्रकार का विवरण अंकित करना रहता है–

1. परीक्षार्थी के विवरण का भागः–

इस भाग में परीक्षार्थी का रोल नम्बर, नाम, जन्म तिथि, वर्ग आदि अंकित किया जाता है।

2. प्रश्नों के उत्तर वाला भागः–

वस्तुनिष्ठ प्रकार की परीक्षाओं में प्रश्न पत्र में प्रत्येक प्रश्न के नीचे चार अथवा पांच उत्तर दिये होते हैं (पूरे प्रश्न पत्र में प्रत्येक प्रश्न के सम्भावित उत्तरों की संख्या समान होती है, ऐसा नहीं कि एक ही प्रश्न पत्र में कुछ प्रश्नों के सम्भावित उत्तर चार तथा कुछ में पांच हों या अन्य कोई संख्या हो) इन्हीं सम्भावित उत्तरों में से सही उत्तर की संख्या वाला गोला या वर्ग का पूरा भाग रंग दिया जाता है, खानों को रंगने का कार्य सुचारु रूप से किया जाना चाहिए। कोई भी स्थान ऐसा न बचना चाहिए जो रंगने से रह जाये।

इसी प्रकार रोल नम्बर, नाम आदि विवरण वाले भाग को भी पूर्णतः भरा जाना चाहिए, इस भाग में पहले रोल नम्बर तथा नाम आदि अंकित किया जाता है तत्पश्चात् नीचे बने सम्बन्धित खानों को काला किया जाता है।

खानों को रंगने अथवा काला करते समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए–

1. खानों को इस तरह से भरें अथवा रंगें कि उसमें लिखे अक्षर दिखाई न दें।

2. खानों का कोई भी छोटा से छोटा भाग भी रिक्त न छूटना चाहिए।

3. खानों को काला करते समय घेरे के बाहर पेन न निकलने पाये।

4. रंगे जाने वाले खानों को छोड़ कर, उत्तर पुस्तिका के किसी भी भाग पर पेन अथवा पेन्सिल का छोटा अथवा बड़ा, किसी भी प्रकार का कोई चिन्ह न लगना चाहिए।

5. प्रत्येक प्रश्न का एक ही उत्तर होता है अतः आवश्यक है कि सोच समझ कर सही उत्तर वाला एक ही खाना रंगना चाहिए।

6. उत्तर पुस्तिका विशेष कागज़ की बनाई जाती है अतः इसे किसी भी स्थान पर मोड़ना न चाहिए, कोने भी न मुड़ने पायें और न ही फटने पायें।

7. उत्तर पुस्तिका पर किसी प्रकार का भी अंकन करने से पूर्व परीक्षा से सम्बन्धित सभी निर्देशों को ध्यान पूर्वक पढ़ना चाहिए। कभी कभी एक उत्तर गलत होने पर दूसरा उत्तर लिखने हेतु विशेष निर्देश रहते हैं।

शेष पृष्ठ...38 पर

–पिछले अंक से आगे

इस्लामी कल्याणकारी व्यवस्थाएं

–मौलाना सय्यिद जलालुद्दीन उमरी

जनहित के कामों के लिए धर्मार्थदान की श्रेष्ठता

जनहित के लिए ज़मीन, जायदाद तथा अपनी मूल्यवान वस्तुओं को 'वक़्फ' (धर्मार्थदान) करने की प्रेरणा दी गयी है। यह इन कामों को जारी रखने का एक बड़ा साधन भी है और वक़्फ़कर्ता के लिए 'अनवरत दान' (सदक़ा–ए–जारिया) भी। अनवरत दान से संबंधित कुछ हदीसें पिछले पृष्ठों में गुज़र चुकी हैं। यहां एक और हदीस पेश की जा रही है। यह हदीस हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत की गयी है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फ़रमाया–

० ''जब इन्सान मर जाता है तो उसके कर्म का सिलसिला समाप्त हो जाता है, परन्तु तीन स्थितियां ऐसी हैं कि उसके कर्म बाक़ी रहते हैं और उसे सवाब मिलता रहता है। वे ये हैं– 'सदक़ा–ए–जारिया' या अनवरत दान, उसका वह ज्ञान जिससे लोग फ़ायदा उठाएं और नेक संतान जो उसके लिए दुआ करती रहे।'' (मुस्लिम)

इमाम नववी इसकी व्याख्या इस प्रकार करते हैं– ''अनवरत दान से अभिप्राय वक़्फ़ है।''

(शरह मुस्लिमः 2/41)

वक़्फ़ के विभिन्न रूपों का अल्लाह के रसूल सल्ल0 के समय में प्रमाण मिलता है, उनमें से कुछ का यहां उल्लेख किया जा रहा है–

(1) इस्लाम ने कल्याणकारी कार्यों का जो प्रतिदान (सवाब) बताया है उसकी चाह में सहाबा रज़ि0 ने अपनी उत्कृष्ट तथा प्रिय वस्तुओं को वक़्फ़ कर दिया।

हज़रत उमर रज़ि0 को ख़ैबर में ग़नीमत के रूप में एक ज़मीन मिली (कुछ रिवायतों में इस का नाम 'समग़' बताया गया है)। वे अल्लाह के रसूल सल्ल0 की सेवा में उपस्थित हुए और अर्ज़ किया कि जो ज़मीन ख़ैबर में मुझे मिली है उससे मूल्यवान और उत्कृष्ट चीज़ मुझे कभी नहीं मिली। मैं उसे अल्लाह की राह में देना चाहता हूं। आप बताएं कि इसका उत्तम तरीक़ा क्या होगा? आप सल्ल0 ने फ़रमाया–

० ''यदि तुम पसन्द करो तो इसका मूल वक़्फ़ कर दो और उसकी आय को सदक़ा कर दो।''

हज़रत उमर रज़ि0 ने आपके मशविरे पर अमल करते हुए उसे इस प्रकार वक़्फ़ किया–

''इसका मूल न तो बेचा जाएगा और न हिबा किया जाएगा और न कोई इसका उत्तराधिकारी ही होगा। इसकी आय सदक़ा होगी—मुहताजों और नातेदारों पर (जो इसके अधिकारी होंगे) गुलामों के आज़ाद करने और अल्लाह के रास्ते (जिहाद) में। यह मेहमानों और यात्रियों पर भी ख़र्च होगी। जो व्यक्ति इसकी देखभाल करे वह भले और सामान्य रीति के अनुसार इसकी आय से स्वयं भी खा सकता है और मित्रों को भी खिला सकता है, परन्तु इससे धन संचित नहीं करेगा।''

(बुख़ारी—मुस्लिम)

इस हदीस से वक़्फ़ के जो आदेश मालूम होते हैं यहां उनका वर्णन नहीं करना है। यहां तो केवल यह बताना अभिप्राय है कि सार्वजनिक हित एवं भलाई के कामों के लिए भी वक़्फ़ होता था और यह वक़्फ़ इसी प्रकार का था।

(2) मुसलमानों की धार्मिक और सामूहिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कुछ सहाबियों ने अपनी सामूहिक जायदाद वक़्फ़ कर दी।

अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने मदीना पहुंचने के बाद जब मस्जिदे नबवी के निर्माण का इरादा किया तो उसके लिए एक ज़मीन का चयन किया जो 'बनू नज्जार' की थी। आपने उनके ज़िम्मेदारों को बुलाया और उसका मूल्य मालूम किया। उन लोगों ने कहा—

''हमें इसका मूल्य नहीं चाहिए, ख़ुदा की क़सम! हम तो इसका मूल्य केवल अल्लाह तआला से चाहते हैं।''

(बुख़ारी—मुस्लिम)

इस प्रकार मस्जिदे नबवी का निर्माण वक़्फ़ की ज़मीन पर हुआ। अतः यह इस बात की दलील है कि जो चीज़ एक से अधिक लोगों के स्वामित्व में हो उन सबकी मर्ज़ी से वक़्फ़ की जा सकती है।

(3) अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने जब भी किसी सामूहिक आवश्यकता या जनहित की ओर ध्यान आकृष्ट कराया तो वह वक़्फ़ के द्वारा कर दी गयी। एक बार आप सल्ल0 ने फ़रमाया कि जो व्यक्ति मस्जिद (मस्जिद नबवी) के विस्तार के लिए फ़लां ज़मीन ख़रीद कर वक़्फ़ कर दे तो उसे जन्नत में उससे अच्छी ज़मीन मिलेगी। हज़रत उस्मान रज़ि0 ने वह ज़मीन अपने पैसे से ख़रीद कर वक़्फ़ कर दी।

(तिर्मिज़ी, नसई)

अल्लाह के रसूल सल्ल0 जब हिजरत करके मदीना आए तो वहां देखा कि मीठे पानी का एक ही कुआं था जिसे 'बिअ्रे—रूमा' कहा जाता था। आपने फ़रमाया कि जो व्यक्ति इसे ख़रीद कर मुसलमानों के लिए वक़्फ़ कर दे और उसमें

उसका भी उतना ही भाग हो जितना एक साधारण मुसलमान का होता है, तो उसे जन्नत में इससे उत्तम चीज़ मिलेगी। हज़रत उस्मान रज़ि0 ने उसे ख़रीद कर वक़्फ़ कर दिया।

(तिर्मिज़ी, सई, बुख़ारी)

(4) मृतक की ओर से वक़्फ़ को अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने पसन्द किया ताकि उसका सवाब उसे निरंतर पहुंचता रहे। आपके समय में इस पर अमल भी हुआ। अतः हज़रत साद बिन उबादा रज़ि0 ने अल्लाह के रसूल सल्ल0 से अर्ज़ किया कि मेरी मां (उमरा बिन्त मसऊद रज़ि0) की सहसा मृत्यु हो गयी। उस समय मैं उपस्थित नहीं था। यदि मैं उनकी ओर से सदक़ा करूं तो क्या उन्हें उसका सवाब पहुंचेगा। आपने फ़रमायाः हां! अवश्य। उन्होंने कहा– मैं आपको साक्षी बना कर कहता हूं कि मेरा अमुक फलदार बाग़ मेरी मां की ओर से सदक़ा है। (बुख़ारी)

जनहित के कामों के लिए मुसलमानों में वक़्फ़ का प्रचलन हर ज़माने में रहा है। इससे इन कामों को जारी रखने में बड़ी सहायता मिलती रही है।

जनहित से संबंधित इस्लाम की जो शिक्षाएं उपरोक्त पृष्ठों में प्रस्तुत की गयी हैं उकनी पूर्णता कुछ अन्य निर्देशों से होती है।

जारी............

◆◇◆

एक मिसाल ज़िन्दगी ....

उनकी जिन्दगी के वाकिआत और उनकी दीनी व इल्मी ख़िदमात पर दफ़्तर का दफ़्तर लिखा जा सकता है, लेकिन ''तामीरे हयात'' के सफहात को सामने रखते हुए यह चन्द सतरें तहरीर हैं, अल्लाह तआला चचा जान मौलाना वाज़ेह रशीद हसनी नदवी रह0 की मग़फिरत फ़रमाये और उनके दरज़ात बुलन्द करे।

आमीन।

❖❖❖

परीक्षा की तैयारी.........

8. इस बात का ध्यान रहे कि गलत उत्तर को ब्लेड आदि से खुरच कर सही उत्तर के लिए दूसरा गोला रंगा जाना परीक्षार्थी के लिए हितकर नहीं होगा, इस प्रकृया से परिक्षार्थी को लाभ तो कदापि नहीं हो सकता लेकिन हानि अधिक हो सकती है।

9. यदि किसी प्रकार का स्याही का निशान उत्तर पुस्तिका पर लग गया है तो उसे ब्लेड से सावधानी पूर्वक खुरच कर मिटाया जा सकता है परन्तु इस बात का ध्यान रहे कि उत्तर पुस्तिका फटने न पाये।

मैंने जब यह लेख लिखना आरम्भ किया तो मेरा कतई यह तात्पर्य नहीं था कि इस लेख को पढ़ने वाला प्रत्येक परीक्षार्थी हर परीक्षा में पास हो जायेगा। परीक्षा वही पास कर पाता है जिसके समक्ष कोई लक्ष्य हो और वह उसे प्राप्त करने के लिए पक्का इरादा बना चुका हो। फारसी की यह कहावत बड़ी मशहूर है।

हिम्मते मरदां, मददे खुदा।

❖❖❖

सीख की बातें

—इदारा

जितना चाहो करो विकास
हरगिज ना लो तुम सन्यास
पर ना भूलो मालिक को
यानी अपने ख़ालिक़ को
पाप कभी तुम करो नहीं
आतंकी तुम बनो नहीं
ख़त्म करो तुम अत्याचार
ख़त्म करो तुम भ्रष्टाचार
जन सेवा अपनाओ तुम
वैध ख़ान ही खाओ तुम
अच्छी शिक्षा करो प्राप्त
कला भी कोई करो प्राप्त
निर्धन्ता को दूर करो
दरिद्रता को दूर करो
देश को अपने समृद्ध बनाओ
जीवन में तुम पुण्य कमाओ
नबी मुहम्मद को तुम मानो
नबी तुम उनको सच्चा जानो
राह उन्हीं की तुम अपनाओ
रब को अपने राज़ी पाओ
रहमत रब की उन पे मुदाम
लाखों करोड़ों उन पे सलाम

मदीना तय्यिबा जाने वालों की ख़िदमत में

—इदारा

मदद ख़ुदा की मिले तुम्हें, तुम पहुँचो मदीना पाक में
पढ़ो दुरूदो खूब सलाम, प्यारे मदीना पाक में
पढ़ो नमाज़ें चालीस तुम, प्यारे नबी की मस्जिद में
सारे फ़र्ज़ जमाअ़त से, पढ़ो नबी की मस्जिद में
बड़े अदब से हाज़िर होना, प्यारे नबी के रौज़े पर
पढ़ना अदब से तीन सलाम, प्यारे नबी के रौज़े पर
पहले नबीये पाक पर, पढ़ना धीमे धीमे सलाम
बूबक्र उमर फारूक़ पर, पढ़ना धीमे ही से सलाम
नहीं भुलाना आ़सी को, ऐसे मुबारक मौक़े पर
पढ़ देना उसका भी सलाम, प्यारे नबी के रौज़े पर
करना ज़ियारत उहुद की जा कर, पढ़ना वां शुहदा पे सलाम
सय्यिदे शुहदा हमज़ा और, उहुद के सब शुहदा पे सलाम
पढ़ने दो रकअ़त नमाज़, कुबा की मस्जिद जाना तुम
अहले बकीअ़ को करने सलाम, बक़ीअ़ की जन्नत जाना तुम
क़िब–लतैनी मस्जिद की भी जाके जियारत करना तुम
पहला क़िबला बैतुल–मक़दिस याद उसे वां करना तुम
छूटे मदीना तुम से जब, आँसू बहा के निकलना तुम
दुरूदो सलाम जितना हो, प्यारे नबी पे पढ़ना तुम
लाखों रहमत नबी पे या रब और करोड़ों उनपे सलाम
आल और अस्हाबे नबी पर, या रब रहमत रहे मुदाम

❖❖❖

Nadwatul Ulama
P.O. Box No. 93, Tagore Marg,
Lucknow - 226007 (India)

ندوة العلمـــاء
ص.ب.٩٣/، تيغورمارغ،
لكناؤ-٢٢٦٠٠٧ يوبى (الهند)

Date 09/09/2018 — التاريخ ٢٨/ذى الحجه ١٤٣٩ھ

باسمہ تعالیٰ

अपील बराए तामीर जदीद हास्टल

अल्लाह तआला का शुक्र है कि दारूल उलूम नदवतुल उलमा हजरत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी की संरक्षता में अपनी इल्मी व दीनी खिदमत में लगा हुआ है, दारूल उलूम में इल्मे दीन के तालिब इल्मों की अधिकता के कारण रिहाइश (निवास स्थान) की बड़ी समस्या हो गई, जिसकी वजह से तालिब इल्मों के दाखिले सीमित करने पड़ते हैं, और नये तालिब इल्मों की एक बड़ी संख्या मायूस होकर वापस हो जाती है। इस सूरतेहाल को देख कर नदवतुल उलमा की प्रबंधक कमेटी ने नये छात्रावास के निर्माण का निर्णय लिया है, जिसका संगे बुन्याद हज़रत मौलाना सैयद मुहम्मद राबे हसनी नदवी दामत बरकातुहुम के दस्ते मुबारक से रखा जा चुका है, और अल्लाह की मदद के भरोसे पर निर्माण कार्य शुरू कर दिया गया है।

इस नये छात्रावास में जो तीन मन्ज़िला होगा, 36 कमरे और 2 हाल होंगे, ताकि तालिब इल्मों की रिहाइश (निवास) के साथ दूसरी शिक्षा संबन्धित ज़रूरतें पूरी हो सकें और वह संतुष्टि होकर शिक्षा प्राप्त कर सकें।

इस निर्माण कार्य पर 3,61,74,600 (तीन करोड़, एक्सठ लाख, चौहत्तर हज़ार, छः सौ) रूपये, और एक कमरे पर लगभग साढ़े चार लाख रूपये के खर्च का अन्दाज़ा है, जो इन्शाअल्लाह अहले खैर के तआवुन (सहयोग) से पूरा होगा। हम उम्मीद करते हैं कि आप इस महत्वपूर्ण कार्य की ओर अवश्य ध्यान देंगे और नदवतुल उलमा के कार्यकर्ताओं का हाथ बटाएंगे।

हमें अल्लाह तआला पर भरोसा है कि उसकी मदद से यह अहम काम पूर्ति को पहुंचेगा।

मौलाना तकीयुद्दीन नदवी	प्रो0 अतहर हुसैन	मौ0 सईदुररहमान आज़मी नदवी
(मोतमद तअलीम, नदवतुल उलमा)	(मोतमद माल, नदवतुल उलमा)	(मोहतमिम दारूलउलूम, नदवतुल उलमा)

चेक / ड्राफ्ट पर सिर्फ यह लिखें।

NADWATUL ULAMA
A/C NO. 10863759733 (IFSC CODE - SBIN0000125)
(State Bank of India Main Branch, Lucknow.)

और इस पते पर भेजें।

NIZAMAT OFFICE, NADWATUL ULAMA,
P.O. BOX NO. 93, TAGORE MARG,
LUCKNOW - 226007 (U.P.)

Phone: +91-522-2741316, Guest House: 2740141, Fax: 2741023
e-mail: nadwa@sancharnet.in, website: www.nadwatululama.org

उर्दू सीखिये

हिन्दी में लिखे अशआर की मदद से उर्दू अशआर पढ़िये

हम सब हैं अल्लाह के, पास उसी के जाना है
रहना याँ है थोड़े दिन का, वहीं हमेशा रहना है
नबी मुहम्मद ने बतलाया, दो ही वहां ठिकाने हैं
जन्नत या दोज़ख़ में रहना, दोनों यही ठिकाने हैं
नबी पे ईमां जो लायेगा, रब को राज़ी पायेगा
राज़ी जिससे रब होगा, वह जन्नत में घर पायेगा
नबी पे ईमां दिल से लाओ, ताकि जन्नत तुम पाओ
राह उन्हीं की अपनाओ, ताकि दोज़ख़ से बच जाओ
लाखों रहमत नबी पे या रब, और करोड़ों उन पे सलाम
आल और अस्हाबे नबी पर, या रब रह़मत रहे मुदाम

ہم سب ہیں اللہ کے، پاس اسی کے جانا ہے
رہنا یاں ہے تھوڑے دن کا، وہیں ہمیشہ رہنا ہے
نبی محمدؐ نے بتلایا، دو ہی وہاں ٹھکانے ہیں
جنّت یا دوزخ میں رہنا، دونوں یہی ٹھکانے ہیں
نبیؐ پہ ایماں جو لائے گا، رب کو راضی پائے گا
راضی جس سے رب ہوگا، وہ جنّت میں گھر پائے گا
نبیؐ پہ ایماں دل سے لاؤ، تاکہ جنّت تم پاؤ
راہ انھیں کی اپناؤ، تاکہ دوزخ سے بچ جاؤ
لاکھوں رحمت نبیؐ پہ یارب اور کروڑوں ان پہ سلام
آل اور اصحابِ نبیؐ پر، یا رب رحمت رہے مدام